कमल संदेश

ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवशक्ति बक्सी

संपादक मंडल

सत्यपाल
संजीव कुमार सिन्हा

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qksu (dk-) : +91(11) 23381428
QSDl : +91(11) 23387887

ई-मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डा. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी-36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली-55 से मुद्रित करा के, डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक - प्रभात झा

विषय-सूची

thr dk t'u कुक्षी एवं सोनकच्छ विधानसभा में मिली जीत के अवसर पर म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का मुंह मीठा कराते प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रभात झा।

विधानसभा उपचुनावों में खिला कमल.. 7

रैलियाँ

बंगलौर में जनता वंदन-कार्यकर्ता अभिनन्दन रैली........................ 9
पश्चिम बंगाल : नवजागरण रैली.. 11
हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) : एनडीए भ्रष्टाचार-विरोधी रैली.................. 14
रोहतक (हरियाणा) : महासंग्राम रैली.. 15

साक्षात्कार

छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह.. 16

लेख

देश को मजबूर नहीं, मजबूत प्रधानमंत्री की आवश्यकता
& lR;iky.. 20

अन्य

जल प्रबन्धन प्रकोष्ठ.. 12
प्रधानमंत्री की प्रेसवार्ता पर भाजपा अध्यक्ष की टिप्पणी.................. 13
पूर्वोत्तर में घोटाला : राष्ट्रपति को ज्ञापन...................................... 18
राष्ट्रीय पदाधिकारी बैठक (कोलकाता) में पारित प्रस्ताव................. 23
उत्तराखंड : अटल खाद्यान्न योजना का शुभारम्भ........................ 28

संपादक के नाम पत्र...

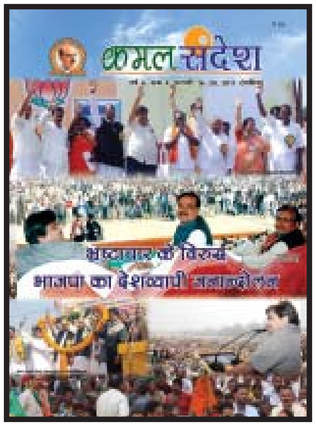

vyxkooknh rkdrk dh 'keukd jktuhfr

स्वतंत्र भारत के करोड़ों देशभक्तों ने आजाद भारत की धरती पर कश्मीर के लालचौक के खुले आकाश के नीचे तिरंगा फहराने की योजना बनाई। इसे लेकर अलगाववादी ताकतों ने जो देशविरोधी राजनीति की, वह शर्मनाक है। भाजपा कार्यकर्ता गणतंत्र दिवस पर लालचौक पर झंडा न फहरा सके, इसके लिए उन्हें 25 जनवरी की रात्रि में जम्मू कश्मीर सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। ऐसी सरकार को सत्ता में बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का रवैया भी दुर्भाग्यपूर्ण रहा। अजीब विडम्बना है कि जिस देश में हम रहते हैं उस देश का राष्ट्रीय ध्वज फहराने पर लोगों को गिरफ्तार कर लिया जाता है।

Loifuy tu
MIG-63 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,
कटनी (मध्यप्रदेश)

व्यंग्य चित्र

घोषणा-पत्र

समाचार–पत्र का नाम	:	dey lns'k
समाचार–पत्र की पंजीयन संख्या	:	दिल्लीइन/2006/16953
भाषा/भाषाएं, जिसमें/जिनमें समाचार–पत्र प्रकाशित किया जाता है	:	हिन्दी
इसके प्रकाशन का नियमकाल तथा जिस दिन/दिनों/तिथियों को यह प्रकाशित होता है।	:	पाक्षिक
समाचार–पत्र की फुटकर कीमत	:	केवल 10 रूपए
प्रकाशक का नाम	:	डा. नन्दकिशोर गर्ग
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	11, अशोक रोड, नई दिल्ली–110001
मुद्रक का नाम	:	डा. नन्दकिशोर गर्ग
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	11, अशोक रोड, नई दिल्ली–110001
सम्पादक का नाम	:	प्रभात झा
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	11, अशोक रोड, नई दिल्ली–110001
जिस स्थान पर मुद्रण का काम होता है, उसका सही तथा ठीक विवरण	:	एक्सेल प्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55
प्रकाशन का स्थान	:	डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रह्मण्यम भारती मार्ग नई दिल्ली–03

हमें लिखें..

सम्पादक के नाम पत्र

कमल संदेश

सादर आमंत्रित

आपकी राय एवं विचार

सम्पादक,
कमल संदेश
डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पीपी–66
सुब्रह्मण्य भारती मार्ग, नई दिल्ली–03
ई-मेल:
kamalsandesh@yahoo.co.in

सम्पादकीय

उनका 'समर्पण', ये 'समर्पित'

''मजबूर प्रधानमंत्री से मजबूत भारत की कल्पना कैसे की जा सकती है?'' यह प्रश्न विपक्ष ही नहीं, वरन् हर भारतीय के मन–मस्तिष्क में उठ रहा है। स्वयं प्रधानमंत्री ने दृश्य मीडिया के अनेक संपादकों के बीच स्वीकार किया कि मैं मजबूर हूं और जो कुछ भारत में हो रहा है वह मजबूरी में हो रहा है। क्या ऐसे दीन–हीन प्रधानमंत्री को भारत का प्रधानमंत्री रहना चाहिए। क्या देश की जनता ने श्रीमती सोनिया गांधी को इसलिए जनादेश दिया कि वह ऐसे पोपटे प्रधानमंत्री बनाए। कांग्रेस को कभी ऐसा नहीं करना चाहिए था। ''मेरी चले, मेरी ही सुने, मैं जो कहूं वह करे, पोपटिया बनकर रहे,'' क्या यह सब देश के प्रधानमंत्री को शोभा देता है? क्या किसी देश के प्रधानमंत्री की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर रोक लगनी चाहिए? क्या उसे किसी और पर आश्रित रहना चाहिए? क्या किसी प्रधानमंत्री के लिए ''कांग्रेस बड़ी, देश छोटा'' जैसी भावना होनी चाहिए? गणतंत्र 62वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है और भारत का प्रधानमंत्री कांग्रेस अध्यक्ष की परतंत्रता में स्वयं छटपटा रहा है, यह कैसी विडंबना है? प्रधानमंत्री में लोग भारत का प्रतिबिंब देखते हैं। जब डॉ. मनमोहन सिंह जी को नौकरशाह या अर्थशास्त्री कहा जाता था तो कांग्रेसियों को नाराजगी होती थी। अगर वे राजनेता होते तो ये दिन देखने को नहीं मिलते।

यह बात भी सच है कि 2004 के लोकसभा चुनाव में उनके नाम पर तो बहुमत बटोरा नहीं गया था। कांग्रेस ने सोनिया जी के नाम पर वोट मांगा था। डॉ. मनमोहन सिंह को प्रधानमंत्री बनाने के नाम पर वोट मांगा जाता तो कांग्रेस को 2004 में जितनी सीटें मिलीं, उतनी नहीं मिलती, लेकिन कुंठित आत्मा से व्यथित श्रीमती सोनिया गांधी ने 'समर्पण' का नाटक कर एक 'समर्पित' प्रधानमंत्री प्राप्त कर लिया और उसको अहसास कराया कि मेरी दी गयी कुर्सी पर तुम बैठे हो। आज्ञाकारी प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह करते भी क्या, दूसरों की पूंजी पर व्यवसाय करना आर्थिक गुलामी कहलाती है। जिस कुर्सी के लायक वो नहीं थे उस कुर्सी पर बैठकर जो वह स्वयं के कारणों से थे वो वह स्वयं भी नहीं रहे। बहुमत की सरकार होती तो कांग्रेस कुछ बात भी बना लेती। अनुभवहीन और राजनेता के कद से कोसों दूर डॉ. मनमोहन सिंह की आज जो स्थिति है वह तो होनी ही थी क्योंकि उनकी कोठी में न कभी राजनीतिक रसद थी न कोई राजनेता था, न राजनीति उनको विरासत में मिली थी। वे तो 'परजीवी' थे और अभी तक 'परजीवी' ही रहे हैं, इसलिए उनसे न भारत को उम्मीद करनी चाहिए न अन्य किसी को। यही कारण है कि देश के मीडियाकर्मियों के सामने अपना मजबूत पक्ष रखने के बजाय मजबूरी का पक्ष रखा। भारत को मजबूर नहीं मजबूत प्रधानमंत्री की आवश्यकता है।

देश के सामने अब यह विचारणीय प्रश्न है कि वह कब तक ऐसे मजबूर प्रधानमंत्री से संचालित होता रहेगा? क्या ऐसे मजबूर प्रधानमंत्री के हाथों में देश सुरक्षित रहेगा। विदेशों में भारत की छवि कैसी बनी होगी? क्या हमको इसका अंदाजा है? क्या ऐसे मजबूर प्रधानमंत्री से देश की समस्या का समाधान हो सकता है? इसलिए आज की महती आवश्यकता है कि कांग्रेस स्वयं की समाप्ति करे, इसमें किसी को आपत्ति नहीं है पर देश की कार्यपालिका की सर्वोच्च कुर्सी पर बैठे असहाय और मजबूर व्यक्ति को न चलाए।

उपचुनावों में भाजपा की जीत

हाल ही में संपन्न हुए उपचुनाव के परिणाम से यह बात उभरकर सामने आई है कि यूपीए जा रही है और एनडीए के आने की आहट धीरे–धीरे सुनाई देने लगी है। गुजरात, झारखंड और छत्तीसगढ़ में भाजपा ने अपनी सीटें बरकरार रखीं पर मध्यप्रदेश ने तो कमाल कर दिखाया। भाजपा ने कुक्षी, जो आदिवासी प्रभुत्व वाली व नेता प्रतिपक्ष की सीट थी, को ही नहीं छीना बल्कि सोनकच्छ, जो अनुसूचित जाति बहुल व उपनेता की सीट थी, वह भी छीन ली। इन दोनों सीटों पर भाजपा ने शानदार जीत दर्ज की। कुक्षी में 16,151 मतों से, तो सोनकच्छ में लगभग 20,000 मतों से जीत हासिल की। ये दोनों सीटें कांग्रेस की परंपरागत सीटें बन चुकी थीं। सहज नहीं था जीतना। दोनों सीटों पर भाजपा की जीत से कांग्रेस न केवल सकते में आई बल्कि प्रदेश में इस बात का संदेश गया है कि भाजपा का काम सर्वस्पर्शी हो रहा है और अनुसूचित जनजाति व अनुसूचित जाति वर्ग के बीच भाजपा का समर्थन बढ़ रहा है। ज्ञातव्य है कि भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष प्रभात झा एवं मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान पिछले कुछ माह से अजजा, अजा व पिछड़े वर्गों के बीच जबरदस्त संगठन कार्य के साथ सरकारी योजना को क्रियान्वित करने में लगे हैं।

शिवराज जी की ''वनवासी सम्मान यात्रा'' को लोग इसी कड़ी में देख रहे हैं। मध्यप्रदेश और देश के अन्य उपचुनाव में भाजपा की जीत ने देश के लोगों के मन में इस बात की आशा जगाई है कि एनडीए का भविष्य उज्जवल है। मणिपुर में हुए उपचुनाव में तृणमूल कांग्रेस, जिसे भाजपा ने अपना समर्थन दिया था, की जीत ने भी शुभ संकेत दिया है। बिहार विधानसभा चुनाव की मार और इन उपचुनावों से आहत कांग्रेस भले ही न सीखे पर भाजपा को अति उत्साह और अति उमंग में नहीं आना चाहिए। जीत को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हुए जनता के बीच सदैव सेवा करने की भावना से पूर्व की तरह जुटे रहना चाहिए। यदि भाजपा कार्यकर्ता एकजुटता, सामूहिकता एवं समन्वय के साथ आगामी चुनाव की तैयारी में लगेंगे तो निश्चित ही भाजपा की अनेक राज्यों में सरकार बनेगी। 2014 लोकसभा चुनाव में भाजपा जितनी सीटों की अपेक्षा कर रही है वह लक्ष्य भी उसे प्राप्त हो सकता है। ■

भाजपा ने गठित की चुनाव सुधार समिति

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने 19 फरवरी को पार्टी की चुनाव सुधार समिति के गठन की घोषणा की जो ईवीएम और राजनीति के अपराधीकरण जैसे चुनाव सुधार के मुद्दों पर अपने सुझाव देगी। इस समिति का संयोजक पार्टी के उपाध्यक्ष श्री मुख्तार अब्बास नकवी को बनाया गया है। समिति के अन्य सदस्यों में पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव श्री थावर चंद गहलोत, राष्ट्रीय सचिव श्री किरीट सोमैया, सांसद श्री अनिल दवे, उत्तर प्रदेश भाजपा के पूर्व अध्यक्ष श्री रमापति राम त्रिपाठी, श्री भंवरीलाल पुरोहित, श्री सत्यपाल जैन, श्री रामकृष्ण, श्री विनय सहस्रबुद्धे और श्री जीवीएल नरसिम्हा राव शामिल हैं। ■

माखन सिंह बने 'अन्त्योदय' के राष्ट्रीय सह प्रमुख

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी द्वारा 24 फरवरी 2011 को जारी निर्देशानुसार श्री माखन सिंह अब अन्त्योदय के राष्ट्रीय सह–प्रमुख का दायित्व संभालेंगे एवं प्रशिक्षण की राष्ट्रीय टीम के सदस्य भी रहेंगे। वे इससे पूर्व मध्य प्रदेश के महामंत्री (संगठन) का दायित्व संभाल रहे थे। श्री भगवतशरण माथुर अब राष्ट्रीय अनुसूचित जाति मोर्चा एवं अनुसूचित जनजाति मोर्चा एवं सहकारिता प्रकोष्ठ के संगठक का दायित्व संभालेंगे। वे इससे पूर्व मध्य प्रदेश के सह–महामंत्री (संगठन) का दायित्व संभाल रहे थे। श्री अरविन्द मेनन अब मध्य प्रदेश के महामंत्री (संगठन) का दायित्व संभालेंगे। वे अभी तक मध्य प्रदेश के सह–महामंत्री (संगठन) का दायित्व संभाल रहे थे। ■

विधानसभा उपचुनावों में खिला कमल

&lioknnkrk }kjk

भाजपा शासित राज्यों में सरकार की नीतियों से लोग खुश हैं। देश के 5 राज्यों में हुए 6 विधानसभा उपचुनावों में जनता ने ऐसा ही फैसला सुनाया। भाजपा ने कांग्रेस को धूल चटाते हुए 5 स्थानों पर परचम लहराया तो कांग्रेस की झोली में एक भी सीट नहीं आया। गौरतलब है कि मध्यप्रदेश में भाजपा ने अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित कुक्षी सीट तथा अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सोनकच्छ सीट कांग्रेस के कब्जे से छीन कर शानदार जीत दर्ज की। वहीं झारखंड में मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा ने भारी अंतर से जीत दर्ज की। छत्तीसगढ़ और गुजरात में भी जीत का सेहरा भाजपा उम्मीदवार के सिर बंधा। मणिपुर में तृणमूल कांग्रेस खाता खोलने में सफल रही, लेकिन यहां भी शिकस्त कांग्रेस की ही हुई।

>kj[kaM

झारखंड में मुख्यमंत्री अर्जुन मुंडा ने खरसांवा सीट एक बार फिर जीत ली। मुंडा ने झारखंड विकास मोर्चा–प्रजातांत्रिक के कृष्णा गागाराय को 17000 से अधिक मतों से हराया।

NÙkhlx<

छत्तीसगढ़ के संजरी बालोद विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में भाजपा की कुमारी बाई साहू ने कांग्रेस के मोहन पटेल को लगभग 9500 मतों के अंतर से पराजित किया। कुमारी बाई साहू के पति मदनलाल साहू के निधन से यह सीट खाली हुई थी।

eè; çns'k

मध्य प्रदेश में धार जिले की कुक्षी विधानसभा सीट भाजपा ने 21 साल बाद कांग्रेस से छीनी जबकि देवास जिले की सोनकच्छ सीट पर भी वह दो दशकों बाद कांग्रेस को हराने में सफल रही। वरिष्ठ कांग्रेसी नेता व नेता प्रतिपक्ष जमुना देवी के निधन से खाली कुक्षी विधानसभा सीट पर भाजपा के मुकाम सिंह किराड़े ने 16651 से अधिक मतों से जीत हासिल की। उन्होंने जमुना देवी की भतीजी कांग्रेस की निशा मिंधर को हराया। सोनकच्छ में राजेंद्र वर्मा ने लगभग 20000 मतों के अंतर से चुनाव जीता। उन्होंने देवास से कांग्रेसी सांसद सज्जन सिंह वर्मा के भतीजे अर्जुन वर्मा को

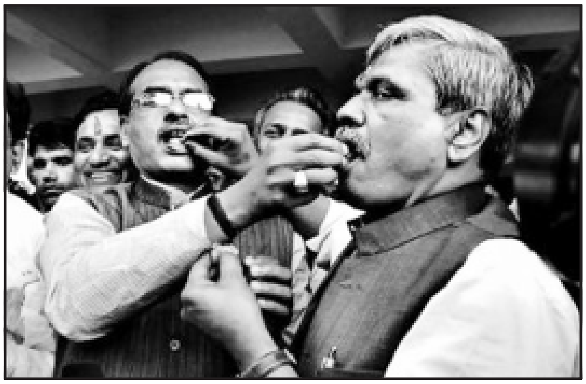

हराया। यह सीट सज्जन सिंह वर्मा के इस्तीफे से ही खाली हुई थी।

xqtjkr

गुजरात में खड़िया विधानसभा के लिए हुए उपचुनाव में भाजपा ने अपने 25 साल पुराने दबदबे को बरकरार रखा। दिवंगत भाजपा नेता अशोक भट्ट के बेटे भूषण भट्ट ने कांग्रेस के जगत शुक्ला को 2473 मतों से हराया।

ef.kiqj

मणिपुर में इंफाल जिले की कोंथूजाम विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में तृणमूल कांग्रेस प्रत्याशी के सारत ने कांग्रेस के एस. रंजन को हराकर राज्य में पार्टी का खाता खोला। सारत को 9592 जबकि एस. रंजन को 8937 वोट मिले। गौरतलब है कि भाजपा ने तृणमूल कांग्रेस प्रत्याशी को अपना समर्थन दिया था। ■

साजिश था गोधरा कांड

गोधरा कांड: नौ साल बाद आया फैसला, ३१ दोषी, ६३ बरी

Xजरात के गोधरा में 27 फरवरी, 2002 को कारसेवकों से भरी साबरमती एक्सप्रेस की एस6 बोगी में आग लगाए जाने के मामले में 22 फरवरी को विशेष अदालत ने पहली बार फैसला सुनाया। इस अग्निकांड में 58 कारसेवकों की मौत हुई थी। विशेष अदालत ने इस मामले में 31 लोगों को दोषी करार दिया और 63 लोगों को बरी कर दिया। अदालत ने माना कि आग साजिश के तहत लगाई गई थी, न कि यह हादसा था। दोषी करार दिए गए लोगों के लिए सजा का ऐलान 25 फरवरी को किया जाएगा। इस मामले में 9 साल में पहली बार फैसला आया।

संप्रग सरकार के नापाक इरादों की कलई खुली : भाजपा

गोधरा ट्रेन अग्निकांड मामले में गुजरात की विशेष अदालत के के फैसले का भाजपा ने स्वागत करते हुए कहा कि इससे इस पूरे मामले पर पर्दा डालने के संप्रग सरकार के नापाक इरादों की कलई खुल गई है।

भाजपा के मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री रवि शंकर प्रसाद ने पत्रकारों से कहा कि इस फैसले से इस घटना को पूरी तरह ढकने की कोशिश करने वाली संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार के नापाक इरादे उजागर हुए हैं। श्री प्रसाद ने कहा, 'इससे निश्चित रूप से इस बात का आश्वासन मिला है कि कानून व न्याय मजबूत हैं। कई ऐसे तत्व थे जो इस घटना को छोटा बताने की कोशिश कर रहे थे। कई राजनेताओं ने इसका दुरुपयोग करने की कोशिश की।' उन्होंने न्यायाधीश यू. सी. बनर्जी समिति की रिपोर्ट पर भी सवाल उठाया। इस रिपोर्ट में कोच के अंदर से आग लगने की बात कही गई थी। श्री प्रसाद ने रिपोर्ट को झूठा करार दिया। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री तरुण विजय ने कहा, 'इस फैसले से केंद्र सरकार और उन छद्म धर्मनिरपेक्षतावादियों के दुर्भावनापूर्ण इरादे उजागर हो गए हैं, जिन्होंने इस घटना में शिकार बने हिंदुओं को दोषी बताने और उन पर आत्मदाह का आरोप लगाने की कोशिश की।' उन्होंने कहा, 'हम इस फैसले का स्वागत करते हैं। हम चाहते हैं कि अपराधियों को शीघ्र कठोर दंड दिया जाना चाहिए।'

२जी घोटाले की जांच के लिए जेपीसी गठित

एकजुट विपक्ष की जीत

2जी स्पेक्ट्रम आवंटन में हुए घोटालों की जांच को लेकर जेपीसी गठन की विपक्ष की मांग के सामने संप्रग सरकार को झुकना पड़ा। अंततः एकजुट विपक्ष की जीत हुई। सरकार ने इस जांच के लिए 24 फरवरी को एक 30 सदस्यीय संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) गठित कर दी। समिति वर्ष 1998 से 2009 की दूरसंचार नीतियों की भी समीक्षा करेगी। गौरतलब है कि घोटालों की जांच जेपीसी से कराए जाने की मांग को लेकर विपक्ष ने शीतकालीन सत्र नहीं चलने दिया था। यदि सरकार चाहती तो इस गतिरोध से बच सकती थी। सरकार ने सत्र के पहले ही दिन विपक्षी दलों को बोलने का मौका दे दिया होता तो पिछला सत्र बेकार नहीं जाता। केंद्रीय वित्त मंत्री प्रणब मुखर्जी ने जेपीसी के गठन के लिए लोकसभा में एक प्रस्ताव पेश किया। समिति को इस वर्ष के मानसून सत्र के अंत तक अपनी रिपोर्ट सौंपने के लिए कहा गया है। मुखर्जी के अनुसार, समिति में अध्यक्ष सहित 30 सदस्य होंगे। इसमें 20 सदस्य लोकसभा से और 10 राज्यसभा से शामिल होंगे। जांच समिति में कांग्रेस के लोकसभा के आठ सदस्य होंगे। इनमें पी.सी. चाको, मनीष तिवारी, जय प्रकाश अग्रवाल, अधीर रंजन चौधरी, वी. किशोर चंद्र देव, दीपेंद्र सिंह हुड्डा, निर्मल खत्री और प्रबण सिंह घाटोवर शामिल हैं। समिति में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के लोकसभा सदस्य जसवंत सिंह, यशवंत सिन्हा, हरीन पाठक और गोपीनाथ मुंडे शामिल हैं। समिति में शामिल अन्य सदस्यों में द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) के टी.आर. बालू, तृणमूल कांग्रेस के कल्याण बनर्जी, जनता दल(युनाइटेड) के शरद यादव, बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के दारा सिंह चौहान, समाजवादी पार्टी (सपा) के अखिलेश यादव, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) के गुरुदास दासगुप्ता, बीजू जनता दल (बीजद) के अर्जुन चरण सेठी और ऑल इंडिया अन्ना द्रमुक मुनेत्र कड़गम (एआईएडीएमके) के एम.थम्बी दुरई शामिल हैं। ■

कर्नाटक में भाजपा सरकार ने 1000 दिवस पूरे किये

काला धन देश में वापस लाकर गरीबों का कल्याण करेंगे : गडकरी

कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री बी. एस. येदियुरप्पा के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार के 1000 दिन पूरे होने के अवसर पर 20 फरवरी 2011 को बंगलौर में एक विशाल 'जनता वंदन–कार्यकर्ता अभिनंदन' रैली का आयोजन किया गया। इसमें लगभग 4 लाख पार्टी कार्यकर्ताओं ने राज्य के प्रत्येक बूथ से भाग लिया।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने इस विशाल सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार विदेशी बैंकों मे कालाधन जमा करने वालों के नाम बताने से इंकार कर रही है, जिससे देश का नाम बदनाम हो रहा है। इसके पीछे एक ही कारण है कि इनके नाम सार्वजनिक करने से बहुत से कांग्रेसी नेताओं के मुंह पर कालिख पुत सकती है।

1.76 लाख करोड़ रूपए के स्पेक्ट्रम आवंटन घोटाले पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि यदि सुप्रीम कोर्ट सरकार को ये सब धनराशि वापस लाने के लिए बाध्य कर दे तो भारत की गरीबी चमत्कारिक रूप से मिट सकती है। उन्होंने ग्लोबल फिनांश्यल इन्टेग्रिटी के विश्वभर के देशों में फैले टैक्स हेवन्स में भारत के लगभग 20.75 लाख करोड़ के अनुमान का हवाला दिया।

उन्होंने वादा किया कि यदि अगले चुनावों में भाजपा सत्ता में आती है तो ये पूरा काला धन गरीबों के कल्याण के लिए देश में वापस लायेगी। उन्होंने दक्षिण भारतीय राज्यों और विशेष रूप से कर्नाटक में गंगा और कावेरी नदियों को एक दूसरे से जोड़ कर पानी की कमी दूर करने का भी वायदा किया जिसके लिए स्विस खातों में जमा काले धन को देश में लाकर इस्तेमाल किया जाएगा।

उन्होंने यह भी कहा कि ''मुझे विश्वास है कि कल हमारा– एनडीए का होगा और अगले चुनावों में एनडीए सत्ता में होगी। भाजपा ही एकमात्र राजनैतिक दल है जो आतंकवाद के खतरे से निपट कर देश के भविष्य को उज्ज्वल करेगा।''

श्री गडकरी ने यूपीए सरकार पर प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के इस बयान पर कटाक्ष करते हुए जिसमें उन्होंने कहा था कि 'मैं उतना दोषी नहीं हूं, जितना मुझे प्रचारित किया गया है' पूछा कि वह ही बता दें कि उनके दोषी होने का प्रतिशत क्या है। यूपीए सरकार के घोटालों में लिप्त होने पर उन्होंने कहा कि यह लगभग 4 लाख करोड़ रूपए के घोटाले हैं जब कि केन्द्र सरकार का बजट 10 लाख करोड़ रूपए का होता है। स्पष्ट है इससे यूपीए सरकार की छवि घोटालों वाली बन गई है।

उन्होंने कहा कि भाजपा ने श्री येदियुरप्पा के नेतृत्व में हाल में ही पंचायती चुनावों में भव्य विजय हासिल की है और वे अपना पूरा कार्यकाल पूरा करेंगे। भाजपा राष्ट्रीय महासचिव श्री अनंत कुमार ने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी और प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के बीच शीत युद्ध

चल रहा है और विभिन्न मंत्री अलग– अलग किस्म के बयान दे रहे हैं और उधर उनके सहयोगी दल मान रहे हैं कि कांग्रेस शर्मिंदगी की हालत में पहुंचाने की कोशिश कर रही है। रैली को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री बी.एस. येदियुरप्पा ने कहा कि सरकार गरीबों की मित्र है और वह इस बार अलग से कृषि बजट प्रस्तुत करेगी।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने तरह–तरह के हथकण्डे अपनाए, जिसमें राजभवन तक का इस्तेमाल शामिल है ताकि भाजपा सरकार को अस्थिर किया जा सके। परन्तु हम पिछले तीन वर्षों की तरह ही लोगों की सेवा निरंतर करते रहेंगे। इससे पूर्व मुख्यमंत्री ने 18 फरवरी 2011 को एक लघु पुस्तिका ''कार्यकर्ता केदिविज'' (कार्यकर्ताओं का दीपक) नाम से विमोचन किया। इस पुस्तिका में सरकार की 1000 दिनों की उपलब्धियां तथा वन्देमातरम् जैसी अन्य कुछ सामग्री दी गई थी जिसे इस अवसर पर कार्यकर्ताओं में वितरित किया गया। ■

'कमलादा मने- प्रदर्शनी' झलकियाँ

- सम्मेलन के दौरान एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- प्रदर्शनी का नाम था 'कमलादा मने' (कमल का घर) और यह 60,000 वर्ग फुट क्षेत्र में फैली थी।
- सरकारी विभागों को अपनी उपलब्धियां सामने रखने के लिए विभिन्न स्टालों में स्थान प्रदान किया गया था।
- प्रदर्शनी के तीन कक्ष थे– विचार, विकास और अन्त्योदय।

fopkj % इसमें भाजपा का इतिहास, विकास, संघर्ष, कार्यक्रम, प्रकाशन, पत्रिकाएं, कार्टून और दुर्लभ चित्र थे। हमारे चित्रदुर्ग सांसद श्री जनार्दन स्वामी, श्री रामध्यानी और अन्य वरिष्ठ कलाकारों के लगभग एक सौ कार्टून यहां प्रदर्शित किए गए थे। एक कक्ष में कन्नड के कवियों और कर्नाटक के राज्यों के नाम थे।

fodkl % इसमें कर्नाटक भाजपा सरकार की उपलब्धियों के 22 स्टालों का एक कक्ष था जिसमें विभिन्न विभागों की उपलब्धियों की पर्याप्त सूचनाएं प्रदान की गई थीं।

vUR;kn; % इसमें अन्त्योदय तथा हमारे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं द्वारा हाथ में ली गई कुछ परियोजनाओं को प्रदर्शित किया गया।

- उद्घाटन स्वयं ही महत्वपूर्ण रहा। श्री अनंतकुमार जी ने पारम्परिक दीपक प्रज्ज्वलित किया। चित्रदुर्ग सांसद श्री जर्नादन स्वामी ने कृषि बजट पर एक कार्टून बनाया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री के.एस. ईश्वरप्पा ने भारतीय जनसंघ के समय से लेकर अब तक के सभी अध्यक्षों के नामों के चार्ट का उद्घाटन किया।
- इस 'कमलादा मने' प्रदर्शनी में 60,000 से अधिक कार्यकर्ताओं ने देखा। बहुतों के आंखों में आंसू आ गए और वातावरण पुरानी यादों से भरा था।
- आईटी सैल, महिला और युवा मोर्चा कार्यकर्ताओं ने इस प्रदर्शनी में स्वयंसेवक के रूप में काम किया।
- यहां दो थिएटर थे जिनमें प्रत्येक में 200 सीटें थी। एक थिएटर में श्री अटल जी के भाषणों का विडियो, अन्य कार्यक्रमों की सीडी, काश्मीर सम्बंधी सीडी शामिल थी। नक्सलवाद विरोधी प्रदर्शनी भी लगाई गई। दूसरे थिएटर में सरकार की उपलब्धियां प्रदर्शित की गयी थीं।
- भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, भाजपा राष्ट्रीय महासचिव और कर्नाटक प्रभारी श्री धर्मेन्द्र प्रधान, भाजपा राष्ट्रीय सह–महामंत्री (संगठन) श्री वी. सतीश, और विधानमण्डल के सम्पूर्ण कैबिनेट सदस्यों ने प्रदर्शनी देखी।

प्रदर्शनी ने सभी कार्यकर्ताओं का मन मोह लिया, मीडिया ने भी इस प्रदर्शनी को आकर्षित किया तथा सभी ने भाजपा के इतिहास को नजदीक से समझा।■

माकपा के कारण राज्य में बेरोजगारी और बदहाली बढ़ी : गडकरी

Hkkरतीय जनता पार्टी, पश्चिम बंगाल ने 30 जनवरी से 13 फरवरी तक 15 दिवसीय नवजागरण यात्रा निकाली। कूच बिहार से यह यात्रा प्रारम्भ हुई थी। यात्रा समापन के अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने कहा कि माकपा से पश्चिम बंगाल की जनता का विश्वास उठ चुका है। राज्य में माकपा की जनविरोधी नीतियों के कारण बेरोजगार और बदहाली बढ़ी है। उन्होंने चुटकुलानुमा अंदाज में कहा कि राजा ने देश का बाजा बजा दिया है।

भाजपा संसदीय दल के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा है कि आजादी के बाद से ज्यादातर समय कांग्रेस केन्द्र में सत्तासीन है और बीते 34 सालों में पश्चिम बंगाल में माकपा की नेतृत्व वाली वाममोर्चा सरकार का अखंड राज चल रहा है। इतने लम्बे शासनकाल में देश को बर्बाद करने में कांग्रेस की अहम भूमिका रही, वहीं पश्चिम बंगाल की पीछे ढकेलने में माकपा ने कोई कसर नहीं छोड़ी है।

श्री आडवाणी ने कहा कि 15 अगस्त 1947 को देशवासियों को अंग्रेजों से मुक्ति मिली थी। ठीक वैसा ही परिवर्तन तीन–चार महीनों के भीतर बंगाल में होगा, जब यहां कि जनता को माकपा से निजात मिलेगी। श्री आडवाणी को प्रदेश भाजपा की नवजागरण यात्रा के समापन पर धर्मतला में आयोजित एक सभा में बोल रहे थे।

श्री आडवाणी ने कहा कि अपने लंबे राजनीतिक जीवन में उन्होंने मनमोहन सिंह जैसा कमजोर प्रधानमंत्री नहीं देखा। श्री आडवाणी ने कहा– मुझे मनमोहन पर दया आती है, वो एक कमजोर प्रधानमंत्री है। श्री आडवाणी ने तर्क दिया कि एक आदमी अच्छा हो सकता है लेकिन अगर वह कमजोर हो और प्रधानमंत्री बन जाए तो भ्रष्टाचार को नियंत्रित नहीं कर सकता।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस भ्रष्टाचार की जनक है। कांग्रेस की अगुवाई वाली यूपीए सरकार के राज में ही सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अवहेलना कर मंत्रियों के फोन टैप किए जा रहे हैं।

श्री आडवाणी ने तृणमूल कांग्रेस का नाम लिए बगैर कहा कि पाला बदलने वाली पार्टी पर पश्चिम बंगाल की जनता भरोसा नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल में तीन–चार महीने में चुनाव होने वाले हैं। अब राज्य की जनता को सोचना है कि वह हिंसा व अराजकता फैलाने वाली पार्टी को वोट देती है या सुशासन और राम राज्य लाने वाली भाजपा को।

इससे पहले झारखंड के मुख्यमंत्री श्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि देश को सही दिशा देने की क्षमता केवल भाजपा के पास है। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार की गलत नीतियों से महंगाई और माकपा की नाकामी से माओवादी समस्या पैदा हुई है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री बीएस येदियुरप्पा ने कहा कि परिवर्तन की हवा का फायदा भाजपा को जरूर मिलेगा। उन्होंने कहा कि बंगाल और केरल से माकपा का सफाया तय है।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री रमेश पोखरियाल ने केन्द्र की यूपीए सरकार पर हमला करते हुए कहा कि कांग्रेस ने देश को भिखारी बना दिया है।

आतंकवाद को भी कांग्रेस ने ही बढ़ावा दिया है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमन सिंह ने कहा कि बीते आठ साल में जब से छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बनी है, तब से छत्तीसगढ़ का कायाकल्प हो गया है।

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि नवजागरण यात्रा की सफलता ने माकपा और तृणमूल कांग्रेस की नींद उड़ा दी है। उन्होंने उम्मीद जताते हुए कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा तीसरी शक्ति बनकर उभरेगी। राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरूण जेटली ने कहा कि माकपा और तृणमूल कांग्रेस एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। उन्होंने कहा कि माकपा ने 1977 से 2011 यानी इन 34 सालों में बंगाल को अर्श से फर्श पर ला दिया है।

पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री राहुल सिन्हा ने कहा कि नवजागरण यात्रा की मार्फत भाजपा ने अपनी ताकत दिखा दी है। उन्होंने कहा कि माकपा और तृणमूल की आपसी रंजिश में राज्य का विकास प्रभावित हो रहा है। राज्य की जनता हिंसा की राजनीति से ऊब चुकी है। राज्य की जनता शांति ओर खुशहाली चाहती है, इसके लिए भाजपा ही एकमात्र विकल्प है। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया, भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्षा श्रीमती स्मृति ईरानी, भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सर्वश्री शाहनवाज हुसैन, कलराज मिश्र, गोपीनाथ मुंडे, भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सुकुमार बनर्जी, तथागत राय, मीडिया प्रभारी रीतेश तिवारी समेत कई लोग मंच पर मौजूद थे।■

जल प्रबंधन को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए : नितिन गडकरी

Hkkजपा, जल प्रबंधन प्रकोष्ठ द्वारा 18 और 19 फरवरी को दो दिवसीय गोष्ठी नई दिल्ली में आयोजित की गयी। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने इस गोष्ठी का उद्घाटन किया।

श्री नितिन गडकरी ने अपने उद्बोधन भाषण में जल के प्रबंधन तथा प्रकोष्ठ की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही अच्छा विषय है, जिस पर चर्चा द्वारा ही सही दिशा मिल सकती है। यदि देश में किसी मुद्दे पर योजना बनाने में कोई भूल हो रही है तो वह है जल प्रबंधन। इस पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना दिया जाना चाहिए।

सरकारें औद्योगिक विकास की बातें तो करती है परन्तु कृषि विकास की बात नहीं करती। उन्होंने आगे कहा कि यदि भारतीय जनता पार्टी की सरकारें सत्ता में आती है तो जल प्रबंधन और कृषि विकास को प्राथमिकता देगी। अभी सिंचाई राज्य सूची का विषय है परन्तु पर्याप्त संसाधन न मिल पाने के कारण जल प्रबंधन पर ठीक प्रकार से ध्यान नहीं दिया जा रहा है। यह समस्या ग्रामीण जनसंख्या को शहर की ओर पलायन के लिए बाध्य करती है। उन्होंने कहा कि सिंचाई को समवर्ती सूची में रखना चाहिए। श्री गडकरी ने भाजपा शासित राज्यों को सलाह दी कि वे जल संरक्षण के विषय को प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतम कक्षाओं के पाठ्यक्रम में शामिल करें। महाराष्ट्र में नागपुर नगर–निगम के चुनाव में हमें विजय मिली हैं, और हम वहां के लोगों को 24 घंटे स्वच्छ पानी उपलब्ध कराने की योजना बना रहे हैं। जल का प्रबंधन एक कला है। इस कला द्वारा जल का सही प्रबंधन कर सकते हैं। उन्होंने प्रकोष्ठ कार्यकर्ताओं को कहा कि जल संरक्षण और प्रबंधन का एक ब्लूप्रिंट तैयार करें। क्योंकि स्थिति इस प्रकार की बन रही हैं कि केन्द्र में अगली सरकार राजग बनायेगी।

दो दिन चलने वाली इस गोष्ठी में भाजपा की उपाध्यक्ष श्रीमती नेजमा हेपतुल्ला, राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया एवं श्री जेपी नड्डा, भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री प्रकाश जावडेकर, ने भी भाग लिया। इस संगोष्ठी में राजग शासित प्रदेशों के सिंचाई मंत्रियों ने अपने राज्यों के जल प्रबंधन सम्बंधित योजनाओं के बारे में पत्र प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में मुख्य वक्ताओं में भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सुरेश प्रभु, श्री टी.एन. हनुमंत राव (पूर्व मुख्य अभियंता) मेग्ससे अवार्ड विजेता श्री राजेन्द्र सिंह, वरिष्ठ भाजपा नेता श्री अनिल दवे भी थे। इस संगोष्ठी का संचालन जल प्रबंधन प्रकोष्ठ के संयोजक श्री राम वैदिरे ने किया।■

निराश किया प्रधानमंत्री ने : नितिन गडकरी

Çधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की 16 फरवरी 2011 की टिप्पणियों को घोटालों पर पर्दा डालने की कोशिश करार देते हुए भाजपा ने कहा कि उनके बयानों से देश को निराशा हुई है। इससे जाहिर होता है कि वे सरकार में कितने असहाय हैं। लेकिन गठबंधन धर्म की मजबूरी के नाम पर वे भ्रष्टाचार को समर्थन नहीं दे सकते।

समाचार चैनलों के संपादकों से प्रधानमंत्री की बातचीत के फौरन बाद भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि पूरा देश प्रधानमंत्री से जानना चाहता है कि द्रमुक नेता ए. राजा के प्रभार में रहे दूरसंचार मंत्रालय की ओर से 2जी स्पेक्ट्रम आबंटन घोटाले को छोड़ कर इसरो के हाल के स्पेक्ट्रम आबंटन विवाद, राष्ट्रमंडल खेलों में भ्रष्टाचार और आदर्श सोसायटी घोटाले को नहीं रोक पाने में गठबंधन की कौन सी मजबूरी रही।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि हर छह महीने में देश में चुनाव नहीं होने देने के लिए गठबंधन धर्म की मजबूरी का हवाला देने का यह मतलब नहीं है कि देश को लूटने की सरकार को इजाजत मिल गई है। श्री गडकरी ने कहा कि प्रधानमंत्री का यह बयान हास्यास्पद है कि 2जी स्पेक्ट्रम लाइसेंस के लिए 'पहले आओ, पहले पाओ' की नीति कैसे लागू की गई, इस बारे में उनके साथ कभी चर्चा ही नहीं हुई।

श्री गडकरी ने प्रधानमंत्री के उस बयान को भी बेतुका और हास्यास्पद करार दिया जिसमें उन्होंने 2जी स्पेक्ट्रम आबंटन के कारण सरकारी खजाने को हुए नुकसान के बारे में कहा कि उर्वरकों और खाद्यान्न पर दी जाने वाली सब्सिडी को भी क्या घाटा कहा जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के बयानों से ऐसा लगता है कि वे भ्रष्टाचार पर पर्दा डालने की कोशिश कर रहे हैं और राजा ने जो किया उसे जायज बताना चाह रहे हैं।

श्री गडकरी ने कहा कि प्रधानमंत्री की यह बात भी समझ से परे हैं कि गुजरात के एक मंत्री पर चूंकि कार्रवाई हुई, इसलिए विपक्ष मुद्दों को बेवजह भड़का रहा है। प्रधानमंत्री का यह बयान अशोभनीय है। हम इस तरह के बयान की कड़ी निंदा करते हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने मीडिया में आ रही खबरों को नकारात्मक बताया और विपक्ष की आलोचना की। इससे पहले वे न्यायपालिका के बारे मे भी टिप्पणी कर चुके हैं। उनकी बातों से तो लगता है कि इस देश में जो कुछ गलत हो रहा है, उसके लिए मीडिया, विपक्ष और न्यायपालिका ही जिम्मेदार है।

उन्होंने कहा कि भाजपा प्रधानमंत्री को यह याद दिलाना चाहती है कि वे सरकार का नेतृत्व करते हैं, वे कैबिनेट का नेतृत्व करते हैं। सरकार में जो कुछ होता है, उसकी जिम्मेदारी से वे बच नहीं सकते। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री ने जाहिर तौर पर यह स्वीकार किया है कि वे असहाय है और मजबूरियों के कारण निर्णय नहीं ले पाते। सिंह ने कहा है कि वे 'उतने' दोषी नहीं है, जितना बताया गया है। मैं उनकी इस ईमानदारी और वास्तविक स्वीकारोक्ति की तारीफ करता हूं। प्रधानमंत्री की बातों से ऐसा लगता है कि इस सरकार को कोई अदृश्य शक्ति चला रही है।

श्री गडकरी ने कहा कि जब टीम जीतती है तो शील्ड कप्तान को मिलती है और जब टीम लगातार हारती है तो कप्तान खुद जिम्मेदारी लेता है और उसे बदल दिया जाता है। प्रधानमंत्री ऐसे कप्तान हैं जो अपनी टीम की हर गलती की जिम्मेदारी दूसरों पर डाल देते हैं। इस सवाल पर कि प्रधानमंत्री खुद को 10 में से सात अंक देंगी, श्री गडकरी ने कहा यह कोई लिखित परीक्षा नहीं हो रही है। फिर भी, परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए 33 फीसद अंक लाना जरूरी होता है। मुझे लगता है कि प्रधानमंत्री के अंक 33 फीसद से भी कम हैं। प्रधानमंत्री की ओर से विपक्ष को जिम्मेदार ठहराए जाने पर नाराजगी जाहिर करते हुए श्री गडकरी ने कहा कि देश में हालात चिंताजनक हैं। ऐसी मुश्किल स्थिति में अगर लोकसभा में विपक्ष की नेता और राज्यसभा में विपक्ष के नेता अपनी बात रखते हैं या विपक्ष कोई जायज मांग करता है तो इसमें क्या गलत है? ■

पूरा देश प्रधानमंत्री से जानना चाहता है कि द्रमुक नेता ए. राजा के प्रभार में रहे दूरसंचार मंत्रालय की ओर से 2जी स्पेक्ट्रम आबंटन घोटाले को छोड़ कर इसरो के हाल के स्पेक्ट्रम आबंटन विवाद, राष्ट्रमंडल खेलों में भ्रष्टाचार और आदर्श सोसायटी घोटाले को नहीं रोक पाने में गठबंधन की कौन सी मजबूरी रही।

जेपीसी गठन के बावजूद भी भ्रष्टाचार विरोधी संघर्ष जारी रहेगा : आडवाणी

&gekj: lokn nkrk }kjk

नडीए के कार्यकारी अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा है कि 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन घोटाले में संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) का गठन हो जाने के बावजूद भी भ्रष्टाचार के खिलाफ संघर्ष जारी रहेगा और उन्होंने जनता से इसमें अपनी मुख्य भूमिका निर्वाह करने का आग्रह किया।

गत 15 फरवरी को निजाम कालेज ग्राउण्ड, हैदराबाद में एनडीए द्वारा आयोजित भ्रष्टाचार विरोधी रैली 'महापोरतम' को सम्बोधित करते हुए श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि भारत की तरक्की इसी बात पर निर्भर करती है कि देश से भ्रष्टाचार को जड़मूल से मिटाया जाए और देश के हर नागरिक का कर्तव्य है कि वह भ्रष्टाचार एवं बेईमानी के साथ किसी किस्म का समझौता न करे।

श्री आडवाणी ने प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की गठबंधन विवशताओं का जिक्र करते हुए कहा कि पहले भी मोरारजी देसाई और अटलबिहारी जैसे प्रधानमंत्रियों ने गठबंधन सरकारों का नेतृत्व किया है और उन्होंने कभी भी गठबंधन धर्म का दामन पकड़ कर भ्रष्टाचार के साथ समझौता नहीं किया।

कामनवेल्थ खेलों, 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन और आदर्श हाउसिंग सोसाइटी सम्बंधी घोटालों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि पहली बार संसद के शीतकालीन सत्र के दौरान एक दिन भी कामकाज नहीं हो सका।

तेलंगाना मुद्दा

श्री आडवाणी ने फिर कहा कि भारतीय जनता पार्टी अलग तेलंगाना राज्य बनाने के पक्ष में है। हालांकि एनडीए के शासन के दौरान झारखण्ड, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड के निर्माण के समय ही हम इस विषय पर आगे बढ़ना चाहते थे, परन्तु उस समय तेलगुदेशम, जो एनडीए का सहयोगी दल था, उसके विरोध के कारण ऐसा नहीं हो पाया। एक विशाल रैली को सम्बोधित करते हुए भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने कहा कि वर्ष 2010 का साल इतिहास में घपले और घोटालों के नाम में शुमार किया जाएगा। वह डॉ. मनमोहन सिंह से जानना चाहते थे कि 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन में भ्रष्टाचार के बारे में जानते हुए भी वे क्यों कोई कार्रवाई नहीं कर पाए?

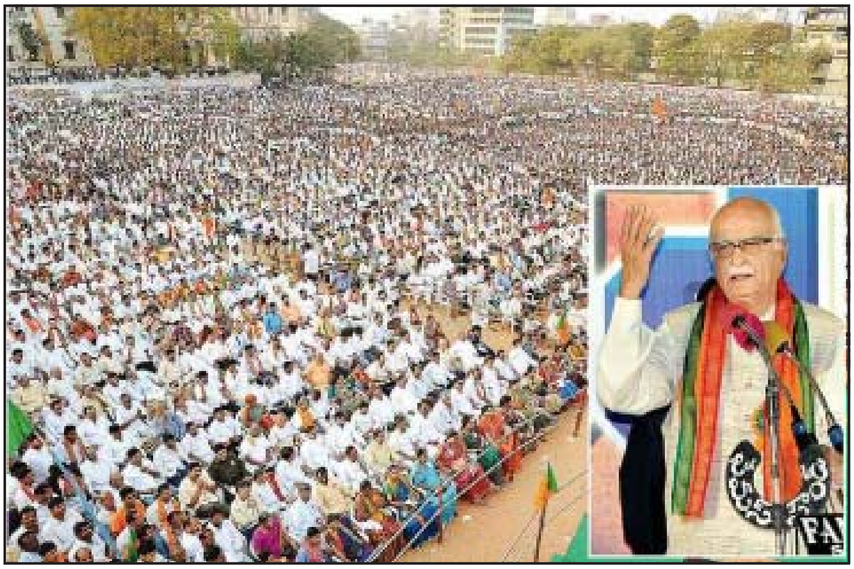

श्री गडकरी ने तेलंगाना मुद्दे पर कांग्रेस पर लोगों के साथ विश्वासघात का आरोप लगाते हुए कहा कि केन्द्र में एनडीए सत्ता में आएगी और वह इस सम्बंध में अपना वायदा पूरा करेगी।

एनडीए संयोजक और जनता दल (यू) राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शरद यादव ने कहा कि यदि एनडीए पुनः सत्ता में आती है तो वह भ्रष्टाचार को समाप्त करेगी और घोटालों में शामिल लोगों को जेल भिजवा कर रहेगी।

पूर्व भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री एम. वेंकैया नायडू, शिरोमणि अकाली दल राष्ट्रीय महासचिव श्री बलविन्द्र सिंह बुल्लर, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री जी. किशन रेड्डी तथा अन्य नेताओं ने भी रैली को सम्बोधित किया। ■

प्रधानमंत्री के गैर-जिम्मेदाराना बयान जायज नहीं : सुषमा

लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने महासंग्राम रैली के दौरान आये तूफान और आंधी पर कहा, 'आता है तूफान तो आने दो हमको भी तूफान की जिद देखनी है।' उन्होंने सेक्टर छह मैदान में एनडीए की महासंग्राम रैली में उपस्थित जनसमूह से इसी आंधी की भांति केन्द्र की यूपीए सरकार को उखाड़ फैंकने का आह्वान किया।

jksहतक (हरियाणा) में 20 फरवरी 2011 को राजग द्वारा आयोजित महासंग्राम रैली में राजग नेताओं ने घोषणा की कि जब तक आदर्श व 2जी जैसे घोटालों के खिलाफ जेपीसी का गठन नहीं किया जाता तब तक संसद नहीं चलने दी जाएगी। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के संयोजक व जदयू अध्यक्ष श्री शरद यादव व विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने ऐलान किया कि यूपीए की केन्द्र सरकार के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों को जनांदोलन का रूप दिया जाएगा।

लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने महासंग्राम रैली के दौरान आये तूफान और आंधी पर कहा, 'आता है तूफान तो आने दो हमको भी तूफान की जिद देखनी है।' उन्होंने सेक्टर छह मैदान में एनडीए की महासंग्राम रैली में उपस्थित जनसमूह से इसी आंधी की भांति केन्द्र की यूपीए सरकार को उखाड़ फैंकने का आह्वान किया।

रैली को संबोधित करते हुए राजग संयोजक श्री शरद यादव ने केन्द्र सरकार को उखाड़ फैंकने का आह्वान करते हुए कहा कि इसके लिए जनता को लामबंद होना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि देश में रोजाना जिस तरह नए–नए घोटाले उजागर हो रहे हैं, यह चिंता का विषय है। श्री शरद यादव ने कांग्रेस पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि भाजपा शासनकाल में महंगाई गायब हो जाती है और कांग्रेस के वक्त यह जीना दूभर कर देती है। इस अवसर पर श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि भ्रष्टाचार के मामले में प्रधानमंत्री जिस तरह के गैरजिम्मेदाराना बयान दे रहे हैं उन्हें जायज नहीं ठहराया जा सकता। उन्होंने कहा कि गठबंधन धर्म की आड़ लेकर भ्रष्टाचारियों का बचाव करना एक तरह से अधर्म है। भाजपा नेत्री ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार भी गठबंधन के सहारे चल रही थी मगर भ्रष्टाचार के मामले में कोई समझौता नहीं किया गया।

श्रीमती स्वराज ने कहा कि महंगाई और भ्रष्टाचार के मुद्दे पर राजग देश भर में 6 बड़ी रैलियां कर चुका है। अब इसके खिलाफ आगे की लड़ाई संसद के बजट सत्र के दौरान लड़ी जाएगी।

रैली को संबोधित करते हुए राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने केन्द्र की यूपीए सरकार के साथ–साथ प्रदेश सरकार पर भी निशाना साधा। मंच पर प्रोफेसर गणेशी लाल, डाक्टर हर्षवर्धन, गिरीश सोमैया, भूपेन्द्र सिंह, प्रदेश संगठन मंत्री सुरेश भट्ट आदि नेता मौजूद थे। सभी अतिथियों का पगड़ी पहनाकर और शॉल भेट कर सम्मानित किया गया। भाजपा की जिला इकाई ने एनडीए के नेताओं को एक बडी फूल माला पहनाकर अभिनंदन किया। ■

मेरे पास लोगों के स्नेह व समर्थन की ताकत है : रमन सिंह

आयुर्वेदिक चिकित्सा में स्नातक की उपाधि प्राप्त करनेवाले छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह एक विनम्र और कर्मशील राजनेता के रूप में मशहूर हैं। उनकी चुनावी राजनीति का सफर पार्षद के रूप में शानदार जीत के साथ शुरू हुआ। वे दो बार मध्यप्रदेश विधानसभा और दो बार छत्तीसगढ़ विधानसभा के सदस्य चुने गए। राजनांदगाव संसदीय क्षेत्र से लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुए और श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्ववाली राजग सरकार में उन्होंने वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री का पद संभाला। छत्तीसगढ़ प्रदेश के गठन के पश्चात् भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बने। उनके नेतृत्व में राज्य की अजीत जोगी की कांग्रेस सरकार को सत्ताच्युत किया गया। इसके बाद उन्होंने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री पद को सुशोभित किया और उनके नेतृत्व में राज्य प्रगति के नए सोपान तय कर रहा है।

पिछले सप्ताह नई दिल्ली में कमल संदेश संपादक मंडल सदस्य l:tho dekj flUgk से डॉ. रमन सिंह ने विभिन्न मुद्दों पर बातचीत की। यहां प्रस्तुत हैं महत्वपूर्ण अंशः

अपने पहले कार्यकाल में आप 'चावल वाले बाबा' के रूप में मशहूर हुए। वर्तमान कार्यकाल की आपकी क्या प्रमुख उपलब्धियां हैं?

मैं उसी भावना और उत्साह के साथ लोगों की सेवा कर रहा हूँ। मेरे पास लोगों के स्नेह व समर्थन की ताकत है, मेरे पीछे भाजपा संगठन का हाथ है और केंद्र में भाजपा के वरिष्ठ नेताओं का आशीर्वाद है। यही वजह है कि हमारी सरकार मौजूदा कार्यकाल में उल्लेखनीय कार्य कर रही है।

भाजपा सरकार सभी वर्ग के लोगों के लिए, जो कुछ संभव हो सकता है, कर रही है। हम प्रतिवर्ष देश में सबसे कम 3 प्रतिशत दर पर किसानों को ऋण प्रदान कर रहे हैं। रोजगार के अवसर सृजित किए जा रहे हैं। 27,000 युवाओं को पुलिस विभाग में भर्ती किया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में एक लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया गया है। इस तरह की अनेक नई योजनाओं को अभी मूर्त रूप दिया जाना बाकी है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली व्यवस्था को सुदृढ़ किया गया है। मुख्यमंत्री खाद्यान्न सहायता योजना के अंतर्गत 37 लाख गरीब परिवारों को प्रति माह 35 किलोग्राम राशन प्रदान किया जा रहा है। 2 किग्रा नमक मुफ्त वितरित किया जा रहा है। गरीब परिवारों के अत्यंत गरीब लोगों को एक रूपया किलोग्राम की दर से चावल मिलता है। भोजन पौष्टिक बनाने के लिए सबको चने की आपूर्ति करने की मैं योजना बना रहा हूँ। इस मामले में मैंने केंद्रीय खाद्य मंत्री के साथ हाल ही में चर्चा की है। एपीएल परिवारों को भी मदद की जा रही है। आदिवासी क्षेत्रों में, हम प्रत्येक गांव में हर दस बच्चों के लिए एक स्कूल खोल रहे हैं।

राज्य में आर्थिक विकास के क्या परिदृश्य हैं?

छत्तीसगढ़ ने 2009–10 में सकल घरेलू उत्पाद में 11.49 प्रतिशत की विकास दर हासिल की, जो राष्ट्रीय औसत की तुलना में अन्य राज्यों से अधिक है। राज्य में पिछले पांच वर्षों के दौरान औसतन 10.9 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्ज की गई। राज्य में प्रति व्यक्ति आय दोगुनी होकर लगभग 34,483 रुपए हो गई है।

पिछले दिनों डॉ. विनायक सेन की सजा को लेकर माहौल बहुत गरम रहा। आप क्या कहेंगे?

मुझे कुछ नहीं कहना है। मुझे न्यायपालिका पर पूरा भरोसा है और मुझे यकीन है कि वे न्याय सुनिश्चित करेंगे।

आपका राज्य माओवादी समस्या से ग्रस्त है। इससे निपटने के लिए आप क्या कर रहे हैं?

मुझे जो कुछ करना चाहिए, मैं वह सब कर रहा हूँ। लेकिन यह समस्या एक राज्य तक ही सीमित नहीं है, यह पूरे राष्ट्र के लिए चुनौती है। इस चुनौती का पूरे राष्ट्र को सामूहिक रूप से एकजुट होकर सामना करना चाहिए न कि केवल एक छत्तीसगढ़ राज्य द्वारा। यह अच्छी बात है कि प्रधानमंत्री ने भी स्वीकार किया है कि यह राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा है। माओवादी खतरे का सामना करने के लिए केन्द्र द्वारा बुलाई गयी मुख्यमंत्रियों की हाल की बैठक में मैंने मांग की है कि नागरिकों के जीवन एवं उनकी संपत्ति को सुरक्षा प्रदान करने के लिए राज्य को क्षतिपूर्ति के तौर पर 700 करोड़ रूपए मिलने चाहिए।

प्रभावित क्षेत्रों में सड़कों के निर्माण के लिए सीमा सड़क संगठन को जो काम सौंपे गए थे, उसे वो पूरा नहीं कर रहे हैं।

आपके संकल्प?

जहां तक मेरी सरकार की बात है, हम नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में शांति की शुरूआत के लिए प्रतिबद्ध हैं। मैंने फैसला किया है कि अगले एक वर्ष के दौरान राज्य प्रशासन अबूझमाड़ के घने वन क्षेत्र के 5000 वर्ग किलोमीटर तक अपनी पहुंच का विस्तार करेगा। इसके साथ ही माओवादियों से बातचीत के लिए मेरी सरकार के दरवाजे हमेशा खुले हैं बशर्ते वे हिंसा छोडें और निर्दोष लोगों की हत्या करना बंद करें। मेरी प्राथमिकता शांति और समृद्धि है।

लोग इस समस्या को किस रूप में देखते हैं?

लोग हर रोज की हिंसा से तंग आ चुके हैं। सैकड़ों निर्दोष पुरुषों, महिलाओं और बच्चों ने अपना जीवन खो दिया है। माओवादी शांति, कानून और निर्दोष नागरिकों के दुश्मन हैं। वे सरकारी कर्मचारियों को जरूरतमंद लोगों की सहायता करने के उनके कर्तव्य को पूरा करने में बाधा खड़ी कर रहे हैं जिससे इस क्षेत्र का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा को दूर करने के लिए माओवादियों के पास कोई विकल्प नहीं है। नक्सली खतरे की वजह से उद्योगपति निवेश करने को लेकर हतोत्साहित हैं।

इसके बावजूद, आपकी सरकार राज्य में निवेश के लिए बड़ी संख्या में औद्योगिक घरानों को आकर्षित करने में कामयाब रही?

यह सच है। समृद्ध पर्यटक क्षमता और खनिज संपदा की वजह से कई उद्यमियों ने राज्य में अपनी इकाईयां स्थापित की है। कुछ और औद्योगिक इकाईयां आने वाली हैं। परिणामस्वरूप, अधिक से अधिक रोजगार के अवसर सृजित किए जा रहे हैं।

राज्य के विकास के मामले में कांग्रेस के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार से आपको किस तरह का वित्तीय या अन्य समर्थन मिल रहा है?

सर्वविदित है कि कांग्रेस के नेतृत्व वाली संप्रग सरकार देश में गैर संप्रग राज्य सरकारों के खिलाफ भेदभाव कर रही है। इसके चलते छत्तीसगढ़ बुरी तरह प्रभावित है। हमें पीडीएस प्रणाली को अधिक आसानी से और कुशलतापूर्वक चलाने के लिए आवश्यक वस्तुओं की पर्याप्त आपूर्ति नहीं हो रही है। इसके बावजूद हम कम दरों पर गरीब वर्गों के लिए राशन उपलब्ध करा रहे हैं, इंदिरा आवास योजना, मनरेगा, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत धन आवंटन के मामले में भी राज्य से भेदभाव हो रहा है।

आपका राज्य विशाल खनिज संपदा से समृद्ध है। फिर भी, अभी तक खनिज संपन्न क्षेत्रों में समृद्धि नहीं आ सकी है?

छत्तीसगढ़ जैसे खनिज संपन्न राज्य दो चुनौतियों से पीड़ित हैं। पहली, खनिज वन क्षेत्रों में उपलब्ध है, जहां सिर्फ अल्प कृषि हो सकती है। खनिजों के चलते होने वाली दिक्कतों के लिए स्थानीय समुदाय को मुआवजा दिया जाना चाहिए। दूसरी, संविधान के तहत, खनिज संपदा को लेकर कानून संसद द्वारा ही पारित किया जा सकता है जबकि राज्य पर उनके कार्यान्वयन की जिम्मेदारी होती है। हमारी वर्तमान सामाजिक–आर्थिक स्थिति को देखते हुए देश को एक ऐसे जनोन्मुख कानून की आवश्यकता है जिससे एक पारदर्शी और घरेलू उद्योग के अनुकूल लाइसेंस व्यवस्था उपलब्ध हो सके। इसके कार्यान्वयन के लिए स्थानीय समुदाय को यह महसूस होना चाहिए कि उनके क्षेत्र में मौजूद खनिज संपदा एक अभिशाप नहीं है, बल्कि प्रकृति प्रदत्त वरदान है। खनिजों का दोहन समृद्धि लाने में सहायक हो, न केवल उनके लिए जो खनिजों का दोहन कर रहे हैं अपितु उनके लिए भी जिनके क्षेत्र में खनिज संपदा मौजूद है। वर्तमान स्थिति स्थानीय समुदायों के बीच संघर्ष और असंतोष पैदा कर रहा है। केंद्र सरकार को चाहिए कि वह संबंधित राज्यों के साथ परामर्श करके खनिज नीति में सुधार लाएं ताकि समग्र विकास के लिए क्षेत्र के लोगों की खुशहाली और राज्य के राजस्व में वृद्धि सुनिश्चित हो सके। ■

पूर्वोत्तर में हुए घोटाले की जांच के लिए विशेष अदालतें बनाई जाएं : नितिन गडकरी

भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने पूर्वोत्तर में घोटालों के सम्बंध में भारत की राष्ट्रपति को 18 फरवरी 2011 को एक ज्ञापन सौंपा, जिसका भावानुवाद नीचे प्रस्तुत है:–

egkefge Jherh i`frHkk ikfVy]
Hkkjr dh jk"Vªifr
jk"Vªifr Hkou
ubZ fnYyh

fo"k; % पूर्वोत्तर में विकास तथा गरीब लोगों को प्रभावित करने वाला भ्रष्टाचार
lanHkZ % पूर्वोत्तर के घोटालों पर भाजपा की तथ्यान्वेषी समिति की रिपोर्ट

महामहिम जी,

भारत में चल रहे घोटालों के बारे में पूरा देश चिंतित है। यह दुख की बात है कि वर्ष 2010 घोटालों का वर्ष रहा। आम आदमी का विश्वास डगमगा गया है। घोटाले विकास पर असर डाल रहे हैं और महंगाई बढ़ा रहे हैं।

पूर्वोत्तर राज्यों में करोड़ों रूपयों के भ्रष्टाचार आम आदमी के जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। विकास अवरूद्ध है। मुख्यमंत्री, मंत्रीगण, कार्यपालिका पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं। समाज कल्याण की योजनाओं, सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) के संसाधनों/धन का विनियोजन, गबन हो रहा है। पूर्वोत्तर राज्यों में पीडीएस के माध्यम से मुश्किल से ही अनाज मिल पाता है। एफसीआई के गोदामों से पीडीएस से वितरित चावल सीधे काला बाजार और बांग्लादेश पहुंच जाता है। ये परिवहन ठेकेदार कोई और नहीं, बल्कि स्वयं मंत्रियों के रिश्तेदार होते हैं।

भाजपा ने एक तथ्यान्वेषी समिति गठित की ताकि पूर्वोत्तर में घोटालों/भ्रष्टाचार के आंकड़ों एवं प्रकार का पता लगाया जा सके। समिति ने विस्तृत काम करने, लोगों के पास जा–जा कर पूछताछ करने के बाद तथा विशेषज्ञों एवं अधिकारियों से बात कर मुझे अपनी रिपोर्ट सौंपी। इस दल ने असम, अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर और पूर्वोत्तर के अन्य भागों का दौरा करके पूर्वोत्तर में विभिन्न घोटालों के दस्तावेजों का पता लगाया। इस रिपोर्ट में लिखा है:

'हाइड्रो–पावर घोटाला' एक और '2–जी घोटाला' है जिसमें पूर्वोत्तर राज्यों में 63,000 करोड़ रुपए का घोटाला हुआ है। हाईड्रो–पावर परियोजना 4,00,000 करोड़ रूपए की है। प्रति मैगावाट दलाली दी गई है। सीधे सहमति पत्र पर हस्ताक्षर हुए, नवगठित कम्पनियों को करोड़ों रूपए की उच्च–तकनीकी परियोजनाएं दे दी गईं।

?kkVkyk---

हाईड्रो–पावर परियोजनाएं	रू 4,00,000 करोड़	हाईड्रो–पावर दलाली	रू 20,000 करोड़
असम घोटाला	रू 20,000 करोड़	मणिपुर घोटाला	रू 5,000 करोड़
अरूणाचल घोटाला	रू 10,000 करोड़	सिक्किम घोटाला	रू 3,000 करोड़
नगालैण्ड, मिजोरम घोटाला	रू 5,000 करोड़		

कुल भ्रष्टाचार/दलाली 63,000 करोड़ रूपए से अधिक बैठती है।

सभी जांचकर्ता एजेंसियों, रेगुलेटरों, अथारिटीज, सामाजिक कार्यकर्ताओं, एनजीओ, विपक्षी दलों ने इन घोटालों के बारे में प्रश्नचिह्न लगाए हैं/चिंता व्यक्त की है। न्यायालयों ने उनकी रिपोर्टों पर आदेश जारी किए हैं, सीएजी ने कड़ी भर्त्सना की है, सीवीसी और एसआईटी ने (न्यायालय द्वारा विशेष जांच दल नियुक्त किए हैं), मीडिया ने अथारिटीज पर आरोप लगाए हैं। लगभग सभी राज्यों में सीएजी की दर्जनों रिपोर्टों में हजारों–करोड़ों रूपयों के घोटाले हुए हैं।

Hkkt ik dh ekx g fd%

- न्यायपालिका की प्रक्रिया को तेजी से चलाने के लिए विशेष अदालतें बनाई जाएं और घोटालेबाजों को दण्ड दिया जाए।
- एनआईए, सीबीआई और अन्य एजेंसियों द्वारा विशेष जांच प्रणाली और त्वरित तथा समन्वित जांच कार्य किया जाए।
- सभी घोटालों की विशेष लेखा परीक्षा हो।
- अदालतों, सीएजी और अन्य जांच एजेंसियों की टिप्पणियों/निंदा पर सरकार द्वारा समयबद्ध रूप से कारगर योजना बनाई जाए।
- घोटालेबाजों की सम्पत्ति जब्त की जाए और सार्वजनिक धन की वसूली हो। घोटाले/लूट में शामिल मंत्रियों और अधिकारियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई हो।

मैं इस अवसर पर आप को इस रिपोर्ट की प्रति संलग्न कर रहा हूं। संवैधानिक अध्यक्ष के नाते मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप सम्बन्धित अधिकारियों से विस्तृत जांच रिपोर्ट और कार्रवाई प्राप्त करें ताकि सार्वजनिक धन का यह दुरुपयोग, गबन न हो। ऐसे घोटालों के प्रशासन से लोगों का लोकतंत्र से विश्वास उठ जाता है।

हमें विश्वास है कि आपके निर्देशों से पूर्वोत्तर में भ्रष्टाचार कम करने में मदद मिलेगी।

सादर,

Hkonh;

fufru xMdjh

iokÙkj d iez[k ?kkVky

1. N C Hills Scam : Assam
2. Subsidy (Transport) Scam : Assam
3. Irrigation Scam :Assam
4. Guwahati Municipal Corporation Scam : Assam
5. Guwahati Urban Development (JNURM) Scam : Assam
6. Police Constable Recruitment Scam: Assam
7. Teachers Appointments Scam: Assam
8. National Highway Scam: Assam
9. PDS Scam of Rs 1000 crore: Assam
10. Flood Control Scam: Assam
11. FakeèFraudulent payments scam, Assam
12. SGRY funds scam, Assam
13. NREGA funds misappropriation scam, Assam
14. Rural development fund embezzlement, Assam
15. Hydro Power Scam :Arunachal
16. SGRY Scam : Arunachal
17. PDS Scam of Rs 1000 Cr: Arunachal
18. Mines & Mineral Allotment Scam : Arunachal
19. Drinking Water Mission Scam: Arunachal
20. Hydro Power projects scam, Arunachal
21. PDS Scam, Arunachal
22. Public Private Partnership scam, Arunachal
23. NREGA scam, Arunachal
24. Siphoning of Entertainment Tax, Sikkim
25. Scam of Nayuma Cable (NC), Sikkim
26. Fraudulent fire to declare burning of 25,000 shows meant for poor children, Sikkim
27. Smuggling of red sandalwood to China, Sikkim
28. Sikkim Power Development Corporation scam, Sikkim
29. Ranka Tourist Villa Scam , Sikkim
30. Sikkim Khadi Board Fraud, Sikkim
31. Kanchandzonga Tourist Villa Scam, Sikkim
32. TB Medicine Scam, Sikkim
33. Fake è Stolen Bank deposits Scam, Sikkim
34. Rs.150Cr Fraudulent Bank deposit scam, Sikkim
35. Hydel power scam, Sikkim
36. Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana Scam, Sikkim
37. SGRY Scam, Sikkim
38. NREGA scam, Sikkim
39. Midday meal scam, Sikkim
40. PDS scam, Sikkim
41. Rajiv Gandhi Vidyutikaran Scam, Sikkim
42. Loktak Lake Cleaning Scam: Manipur
43. Teachers Appointment Scam: Manipur
44. Road Construction Scam: Manipur
45. Big Dam è Irrigation Scam: Mizoram
46. Cement Land Scam: Meghalaya
47. North-East Subsidy Scam
48. AIBP scam, Nagaland
49. Rural Infrastructure Development Fund scam, Nagaland
50. NREGA scam, Nagaland ■

देश को मजबूर नहीं, मजबूत प्रधानमंत्री की आवश्यकता

& IR;iky

yगता है जब प्रधानमंत्री ने संसद का सत्र शुरू होने से पूर्व कुछ चैनलों के संपादकों को प्रेस कांफ्रेंस में आमंत्रित किया तो उनका उद्देश्य यही रहा होगा (हालांकि उनसे 'प्रेस सम्मेलन क्यों बुलाया गया'– यह सवाल किया भी गया, परन्तु वह इसे टाल गए) कि वह स्वयं को 'मजबूर' दिखाकर आमंत्रितगणों का सहानुभूति जीत पाएं, जिसका वे पूरे देश में प्रचार कर दें। परन्तु ऐसा हो नहीं पाया क्योंकि यहां किसी के मन में भी उनकी 'मजबूरी' की बात पैठ नहीं पाई। भारत जैसे विशाल देश को किसी की कृपा से बने मजबूर प्रधानमंत्री नहीं बल्कि मजबूत प्रधानमंत्री की आवश्यकता है, जो यथार्थ में लोकतंत्र का रखवाला हो, जिसे जनता ने चुना हो। दुख होता है, यह कहते हुए भी कि एक बहुत स्वच्छ छवि रखने वाले अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री न तो महंगाई पर नियंत्रण रख पाए और न भ्रष्टाचारियों और घपले, घोटालों को रोक पाए, बल्कि उन्होंने तो भ्रष्टाचारियों को अपने शासन में पूरी तरह से क्लीनचिट देकर उन्हें भ्रष्टाचार करने की शह ही दी है और इस प्रक्रिया में स्वयं की छवि धूमिल कर बैठे हैं।

प्रधानमंत्री जी ने अपने आरम्भिक वक्तव्य में यही कहा कि मीडिया को भारत को घपले–घोटालों का देश कह कर प्रचारित करना ठीक नहीं है क्योंकि इससे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में देश की छवि धूमिल होती है। मीडिया 'चौथा स्तम्भ' होता है, और यह स्पष्ट है कि उसे अपनी भूमिका का निर्वाह करना होता है। यदि देश में भ्रष्टाचारियों का बोलबाला हो और यहां एक नहीं, अनेकों घपले–घोटाले दिखाई पड़ते हों तो क्या मीडिया इन पर सिर्फ इसलिए चुप और मौन बैठी रह जाए कि इससे विश्व में छवि धूमिल होगी।

वैसे भी प्रधानमंत्री को यह बात भी नहीं भूलनी चाहिए कि आज पूरा विश्व एक छोटे से गांव के समान हो गया है। मीडिया उनकी बात मान भी लेती तो भी क्या विश्व भ्रष्टाचार और घोटालों की खबर से अनजान रह सकता है? यह भी सच है कि दुनिया के अन्य देशों में भी भ्रष्टाचार है। क्या आप विश्व के अन्य देशों में व्याप्त भ्रष्टाचार से अनभिज्ञ हैं? कदापि नहीं! यदि मीडिया ने भ्रष्टाचारियों और घपले घोटालों का पर्दाफाश न किया होता तो कांग्रेस के नेतृत्व में चल रही सरकार भी जो थोड़े बहुत कदम उठाने पर मजबूर होना पड़ा है, वह भी नहीं उठाए जाते। बल्कि खेद का विषय तो यही है कि आज भी यथार्थ में वह उन दोषियों को बचाने में जुटी है जिन्होंने देश के खजाने को अरबों–खरबों रूपए का नुकसान पहुंचाया है। यदि मीडिया में 'कैग' की रिपोर्ट को प्रकाशित–प्रचारित न किया गया होता तो प्रधानमंत्री ने जिस संचारमंत्री ए. राजा को 'क्लीनचिट' दी हुई थी, क्या उनसे विवश और बाध्य होकर इस्तीफा मांगा गया होता? जी नहीं, यह सम्भव नहीं था। आज भी 'कामनवेल्थ' खेलों में 76000 करोड़ रूपए से अधिक राशि लुटा कर आयोजन समिति के अध्यक्ष

> ***भारत जैसे विशाल देश को किसी की कृपा से बने मजबूर प्रधानमंत्री नहीं बल्कि मजबूत प्रधानमंत्री की आवश्यकता है, जो यथार्थ में लोकतंत्र का रखवाला हो, जिसे जनता ने चुना हो। दुख होता है, यह कहते हुए भी कि एक बहुत स्वच्छ छवि रखने वाले अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री न तो महंगाई पर नियंत्रण रख पाए और न भ्रष्टाचारियों और घपले, घोटालों को रोक पाए, बल्कि उन्होंने तो भ्रष्टाचारियों को अपने शासन में पूरी तरह से क्लीनचिट देकर उन्हें भ्रष्टाचार करने की शह ही दी है और इस प्रक्रिया में स्वयं की छवि धूमिल कर बैठे हैं।***

साभार : रा.पत्रिका

(जिन्होंने हाल में बमुश्किल इस्तीफा दिया है) को खुला छोड़ रखा गया है। केवल दो–तीन अधिकारियों पर ही सीबीआई ने कुछ कार्रवाई की है जबकि मुख्य आरोपी कलमाड़ी तथा दिल्ली की सत्ता में बैठे अन्य मंत्रीगण आदि पर तो हाथ लगाने की सीबीआई ने जुर्रत तक नहीं की है। इसी से सीबीआई की जांच भी संदेह के दायरे में आती दिखाई पड़ने लगी है। 90 दिनों में पूरी होने वाली जांच अब तक इतनी अधूरी है कि श्री कलमाड़ी पर न तो आरोप–पत्र तैयार हो सका है न ही उन्हें गिरफ्तार किए जाने की नौबत आ पाई है।

उधर, श्री कलमाडी साहब शेर बने हुए हैं और यहां तक कि वे यह कहने में भी नहीं चूक रहे हैं कि पूरे मामले की जांच जेपीसी करे, जिससे कांग्रेस के सत्ताधारी और उनके संरक्षक परेशानी में पड़े हुए हैं, क्योंकि कांग्रेस तो कामनवेल्थ खेलों की जांच जेपीसी से करवाने के पक्ष में नहीं है। उनका यह कहना तो और भी हास्यास्पद है कि यदि मैंने एक रूपया की रिश्वत ली हो तो संसद से त्यागपत्र दे दूंगा। कमाल है, यदि उनके खिलाफ घोटालों का पता चल जाता है तो मात्र संसद से इस्तीफा देना पर्याप्त होगा? ऐसे घोटालों मे कई वर्षों तक की सजा होना ही अनिवार्य है और तभी 'न्याय' को न्याय मिल सकता है। लेकिन लगता है कि न्याय नहीं मिल पाएगा क्योंकि प्रधानमंत्री खुद ही हर बात को 'प्रक्रियागत' कारण का नाम दे देते हैं। 'लॉ विल टेक इट्स ओन कोर्स'! क्या बात है साहब, उन्हें यह बात ध्यान में ही नहीं आती कि 'जस्टिस डिलेड इज जस्टिस डिनाइड'। बात यह है कि सत्ता हमारे हाथ में है, हमें जो 'सूट' करता है, वही ठीक है।

पूर्व संचारमंत्री ए. राजा के बारे में प्रधानमंत्री का यह कहना कि मैंने तो उन्हें पत्र लिख दिया था और उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया था कि वे नियमों के दायरे में ही काम करेंगे या फिर वित्त मंत्रालय और अन्य अधिकारियों की सिफारिशों के कारण पीएमओ ने कोई कार्रवाई नहीं की, क्या इससे प्रधानमंत्री 1,76,000 करोड़ रूपए से अधिक घोटाले से अपनी जिम्मेदारी से बच सकते हैं, जबकि उन्होंने ही ए. राजा को 'क्लीनचिट' अपने हाथों से दी थी। क्या प्रधानमंत्री नहीं मानते कि संविधान के अनुसार वे सर्वोच्च स्थान पर बैठकर अपनी 'सामूहिक' जिम्मेदारी से नहीं बच सकते हैं? प्रधानमंत्री का यह कर्त्तव्य होता है कि वह प्रत्येक मंत्रालय के औचित्य–अनौचित्य पर नजर रखे और गलत कार्य होने पर तुरंत कार्रवाई करे, यहां तो वह स्वयं उन्हें 'क्लीनचिट' देते हैं और फिर कहते हैं कि मेरा इससे कोई लेना–देना नहीं है और मैं 'गठबंधन' के कारण मजबूर था। मैं ए. राजा को इसलिए नहीं हटा सका क्योंकि वह तो 'डीएमके' की पसंद थे। यदि ऐसा था भी तो फिर डीएमके की इस संचार मंत्रालय की सीट को कांग्रेस के श्री सिब्बल को क्यों सौंपा गया, जिन्होंने तो संवैधानिक संस्था 'कैग' की रिपोर्ट ही खारिज करके रख दी। अब प्रधानमंत्री कहते हैं कि मैं सिब्बल से सहमत नहीं हूं तो फिर वे उन्हें संचार मंत्रालय से हटा क्यों नहीं देते? क्या यह भी उनकी 'मजबूरी' में ही आता है? नहीं, यह मजबूरी नहीं, बल्कि दोषी का साथ देने वाला दोषी ही माना जाएगा।

वैसे तो मसल मशहूर हो चुकी है कि 'जब–जब कांग्रेस सत्ता में आई, महंगाई लाई' बल्कि इसमें यह और जोड़ देना चाहिए कि कांग्रेसी सत्ता का मतलब ही 'भ्रष्टाचार, मेरा जन्मसिद्ध अधिकार' है। जहां वह कालाधन देश में वापस लाने का वादा कर रही है, वहीं देखिए कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद भी उसने एक मंत्री–समूह का विदेशों में कालेधन का पता लगाने का गठन कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर ली। अतः, आगे आप देखते जाइए, यह सब बातें हैं, कोरी बातें, 'बातें हैं बातों का क्या'? जनता पिस रही है– वही क्रांति भी लाएगी।

अब तो खाद्यान्न घोटाले सहित अनेक घोटालों के साथ–साथ उनके ही नेतृत्व में चल रहे मंत्रालय के अन्तर्गत 'इसरो' का नाम भी आ गया है, जिसमें कहा जा रहा है कि 'एण्ट्रिक्स' और 'देवास मल्टीप्लेक्स' के साथ सौदे रद्द किए जा रहे हैं। यह भी मीडिया के प्रकाशित–प्रचारित का ही परिणाम है कि कांग्रेस नीत–यूपीए सरकार ने कुछ कदम उठाना महसूस किया। इसरो घोटाले से तो सुरक्षा पर भी गहरी आंच आ सकती है।

भ्रष्टाचार और घपलों–घोटालों की बहुत सी गाथाएं हैं– जो अधिकांशतः सही भी हैं, परन्तु यूपीए सरकार का रवैया सब पर पर्दा डालने का रहा है। पूरा का पूरा पिछला संसद सत्र बर्बाद हुआ, अब जा कर सुना जा रहा है कि सरकार केवल 2–जी स्पेक्ट्रम मामले की जांच कराने को तैयार हुई है। यह उस कहावत को सिद्ध करती है 'सौ प्याज भी खाए और सौ जूते भी।' देश की संसद सत्र का नुकसान भी किया और फिर जाकर होश आया– चलो जेपीसी का गठन करेंगे। हालांकि सीमित दायरे की जेपीसी का गठन कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार अनमनेपन से कर रही है, विवशतावश कर रही है, अन्यथा उसे कॉमनवेल्थ खेल, आदर्श सोसाइटी आदि अनेकों घोटालों की भी जांच करा कर भ्रष्टाचार से मुक्ति पाने का संदेश देश को देना चाहिए था।

विदेशों में काला धन एक और

ऐसा मुद्दा है जिस पर यूपीए सरकार विदेशों से हुई संधियों को लेकर प्रधानमंत्री ने भारतीयों के नाम बताने से इंकार किया है। खैर, मामला सर्वोच्च न्यायालय में है, इसलिए उम्मीद है कि कुछ सार्थक निर्णय सामने आएगा।

प्रधानमंत्री से पूछे गए अनेक प्रश्नों में एक महंगाई और मुद्रास्फीति का प्रसंग विशेष था जिस पर भी प्रधानमंत्री बगलें झांकते नजर आए। आम आदमी ही नहीं, मध्यमवर्ग तक का आदमी भी खाद्यान्न, पेट्रोल तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती महंगाई से त्रस्त है। कांग्रेस का यह गठबंधन मौन साधे बैठा है जबकि स्वयं प्रधानमंत्री ही विशेषज्ञ–अर्थशास्त्री हैं और उनका साथ देने वाले योजना आयोग के उपाध्यक्ष एम.एस. अहलूवालिया भी हैं। परन्तु तब से प्रधानमंत्री के नेतृत्व में महंगाई और मुद्रास्फीति पर वादे, और सिर्फ वादे किए हैं। कभी कहा जाता है कि 2010 में जून तक महंगाई काबू में आएगी, फिर इसकी आगे, फिर और आगे तारीखें बढ़ती गईं और ज्यों–ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता रहा की लोकोक्ति सिद्ध होती रही। अब कहा जा रहा है कि बस मार्च तक महंगाई काबू में आ जाएगी। हमें लगता है कि यह 'सब वादे हैं, वादों का क्या?' वाली स्थिति बन कर रह जाएगा।

प्रधानमंत्री के इस कथन की बड़ी चर्चा हुई है कि दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। यह भी प्रधानमंत्री की मात्र दूर की कल्पना है। लोगों में आम धारणा है कि किसी भी बड़े दोषी को कभी सजा नहीं मिलती है, जिसके बारे में हम ऊपर कलमाडी और ए. राजा का उदाहरण तो दे ही चुके हैं, जिसमें आप क्वात्रोच्ची को भी शामिल कर सकते हैं। और भी अनगिनत उदाहरण हैं। अतः कोई दोषी नहीं बख्शा जाएगा, यह भी गलत साबित होता दिखाई पड़ रहा है। इस सरकार के वादे–कसमे सब झूठे हैं। वादे हैं, वादों का क्या?''

प्रधानमंत्री का यह भी कहना है कि 'महंगाई भले बढ़े परन्तु हम विकास पर रोक नहीं लगने देंगे। एक बात बिलकुल समझ में नहीं आती कि आम आदमी के लिए आवश्यक क्या है? आम आदमी जी सके, उसे रोटी, कपड़ा, मकान' जैसी मूलभूत आवश्यकताएं मिल सकें। यदि यह नहीं हुआ तो वह बदहाल बना रह जाएगा और यह विकास के नाम पर बन रही सड़कों, बिजली, पानी आदि अनेक बुनियादी ढांचे का भी उपयोग नहीं कर पाएगा। यह विकास सिर्फ बड़े धनाढ्य लोगों तक सीमित रह जाएगा। जरूरी यही है कि 'मुद्रास्फीति और विकास' में संतुलन हो। वरना आम आदमी बिलखता रहेगा, क्या वह ऐसे विकास को लेकर चाटेगा? नहीं, पहली जरूरत आम आदमी को समृद्ध बनाने की है, तभी विकास का महत्व होगा।

प्रधानमंत्री ने अपने प्रेस सम्मेलन में एक और हास्यास्पद मुद्दा उठा कर हैरानी में डाल दिया। उन्होंने कहा कि भाजपा का केन्द्र सरकार के प्रति सख्त रवैया इस कारण है कि वे गुजरात के एक मंत्री पर कठोर कार्रवाई न करें? अच्छा होता कि प्रधानमंत्री इस बारे में कुछ प्रमाण साथ दे देते तो मीडिया के लोगों को प्रधानमंत्री की बात का सही ढंग से विश्वास हो जाता और फिर मीडिया में भी ऐसे अनेक लोग हो सकते हैं जो भाजपा के खिलाफ विचारधारा रखते हैं, तो उन्हें तो अच्छा अवसर मिल जाता और प्रधानमंत्री का भी मनोरथ पूरा हो जाता।

प्रधानमंत्री की प्रेस कांफ्रेंस में कुछ अन्य पहलू भी उठाए गए, उन सभी पर चर्चा करना संभव नहीं है। परन्तु उन्होंने जब यह कहा कि हम से भी कुछ गलतियां हुई हैं, परन्तु मैं उतना 'कलप्रिट' (दोषी) नहीं हूं– इस पर इतना ही कहा जा सकता है कि उन्होंने दोष होने की बात कबूली। इसके दूसरे पक्ष के बारे में प्रधानमंत्री की बेबसी ज्यादा समझ में आने वाली बात दिखाई नहीं पड़ती। उनका कहना कि गठबंधन में बहुत सी राजनैतिक मजबूरियों को सहना पड़ता है, अन्यथा हर छह महीने में चुनाव कराना देश के लिए अच्छा नहीं होगा। इससे केवल सत्ता में रहने की भूख का ही पता चलता है। एक जमाना था कि लालबहादुर शास्त्री ने एक रेल दुर्घटना पर अपना त्यागपत्र देते हुए कहा था कि 'मैं रेलमंत्री हूं' तो मेरा नैतिक दायित्व बनता है कि प्रशासन को ठीक ढंग से चला सकूं, नहीं तो नैतिक आधार पर मुझे इस्तीफा दे ही देना चाहिए और वह मैं कर रहा हूं। आज जब स्वच्छ छवि वाले प्रधानमंत्री इतनी मजबूरी, विवशता, बेबसी और लाचारी की हालत में दिखाई पड़ रहे हैं, जिसे मीडिया ने भी अच्छी तरह समझा और प्रकाशित किया है तो वह क्यों कांग्रेस के इन ढोंगी राजनीतिज्ञों के बीच बैठकर अपनी साख गंवा रहे हैं?

चलते–चलते, एक बात और कहना जरूरी हो गया है। कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार द्वारा लिखित राष्ट्रपति के संसद में दिए भाषण में 'भ्रष्टाचार, कालाधन और महंगाई को सर्वोच्च प्राथमिकता' देने की बात कही है। वैसे तो मसल मशहूर हो चुकी है कि 'जब–जब कांग्रेस सत्ता में आई, महंगाई लाई' बल्कि इसमें यह और जोड़ देना चाहिए कि कांग्रेसी सत्ता का मतलब ही 'भ्रष्टाचार, मेरा जन्मसिद्ध अधिकार' है। जहां वह कालाधन देश में वापस लाने का वादा कर रही है, वहीं देखिए कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद भी उसने एक मंत्री–समूह का विदेशों में कालेधन का पता लगाने का गठन कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर ली। अतः, आगे आप देखते जाइए, यह सब बातें हैं, कोरी बातें, 'बातें हैं बातों का क्या'? जनता पिस रही है– वही क्रांति भी लाएगी।■

महंगाई, भ्रष्टाचार और घोटाले–घपलों की यूपीए सरकार देश की बदहाली का कारण

कोलकाता में 15 फरवरी को भाजपा राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक में पारित प्रस्ताव

Hkk रतीय जनता पार्टी आज देश के सामने खड़े राष्ट्रीय संकट पर अपनी गहरी चिंता और आक्रोश व्यक्त करती है। भ्रष्टाचार की अकल्पनीय श्रृंखला, बेहद बढ़ती मुद्रास्फीति, सरकार और इसकी नीतियों से उठता विश्वास, वैचारिक संस्थानों की अवमानना और ह्रास, गवर्नेंस की भारी

कमी और सत्ता में बैठे लोगों की गहरी चुप्पी। परिणाम यह है कि लोगों के मन में लाचारी का भाव आ गया है जिससे उनमें हताशा और निराशा उपजी है।

भारतीय लोकतंत्र और इसे कायम रखने वाले संस्थान संकट में हैं। इस प्रकार की स्थिति इससे पूर्व 70 के दशक में आई थी जब कांग्रेस ने आपातकाल की घोषणा की थी। अब फिर से कांग्रेस–नीत यूपीए गठबंधन की कृपा से भारत उसी कगार पर आ खड़ा हुआ है।

हमारे नागरिकों के मन में विश्वास का संकट पैदा हो गया। प्रशासन एक दम स्थिर है। खाद्यान्न की बढ़ती कीमतों जैसे मामलों पर भी महीनों तक, अब तो दो वर्ष हो गए हैं, कोई उपचार और समाधान सामने नहीं आ पा रहा है।

विकास या मुद्रास्फीति केवल एक पर ही ध्यान दिया जा सकता है?

यह सरकार विकास पर अड़ी है, बिना इस बात की चिंता किए कि खाद्यान्न की कीमतें बढ़ रही है, जिसे भारतीय रिजर्व बैंक ने भी उचित नहीं माना है। उसने कहा है कि यदि विकास को अवरूद्ध करना पड़ता है तो भी मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना होगा...''

यह स्मरण कराना अनुचित नहीं होगा कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के शासन में, जिसका नेतृत्व श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने किया था, मुद्रास्फीति को भलीभांति नियंत्रित रखा गया था। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित मुद्रास्फीति की वर्ष–दर–वर्ष दिसम्बर की स्थिति से स्पष्ट पता चलता है कि जब से यूपीए सरकार सत्ता में आई है तब से मुद्रास्फीति बढ़ती चली जा रही है और अब तो 3 वर्षों से निरंतर बढ़ते हुए लगभग या 10 प्रतिशत से अधिक होती जा रही है।

यह स्मरण कर दुख होता है कि खाद्यान्न की कीमतें पिछले 24 महीनों में लगभग 15 प्रतिशत से 18 प्रतिशत के आसपास मंडरा रही है। मुद्रास्फीति रोकने के लिए कोई खास कदम नहीं उठाए गए है। इस बारे में यह कहकर दोष मढ़ा जाता है कि जमाखोरों और काला बाजारी करने वाले लोगों की जिम्मेदारी राज्यों की है।

वास्तव में इस मामले में भी गैर–कांग्रेसी सरकारों का कार्य प्रदर्शन ऐसे आप्रेटरों पर शिकंजा कसने का काम कहीं बेहतर है, परन्तु केन्द्र सरकार इन राज्यों के कार्यों का समर्थन नहीं करती है। इससे भी बुरी बात यह है कि खाद्यान्न और चीनी को सस्ती दरों पर निर्यात करने के मामले में मांग और पूर्ति का ध्यान रखे बिना केन्द्र सरकार की नीतियां समझ में नहीं आती हैं और फिर इन्हीं चीजों को तिगुने दाम पर खरीदा जाता है तो यह मामला और उलझ जाता है। राजकोषीय घाटे की बुरी दशा और बढ़ते बाह्य ऋणों से अर्थव्यवस्था को और भी कमजोर कर देती है।

मनीलांड्रिंग के कारण मुद्रास्फीति में बढ़ोतरी

जैसे–जैसे विभिन्न प्रकार के घोटालों की सच्चाई और आंकडे खुलकर सामने

आ रहे हैं उससे घपलों की स्थापना नजर आने लगती है। इनसे पता चलता है कि वर्ष 2007 से ही टैक्स हैवन से यह काला और अवैध धन विभिन्न स्रोतों से आ रहा है और अधिकांश वित्तीय सतर्कताओं पर कोई ध्यान ही नहीं दिया जाता जब तक कि सीएजी 2जी स्पेक्ट्रम और कामनवेल्थ खेलों के घोटालों की पोल खोलकर सामने नहीं रख देता है।

भारत में जिस प्रकार से मनी लांड्रिंग हुई, इससे पहले कमी नहीं हुई भी। भवन निर्माता दलालों, कार्पोरेट बिल्डर, ब्यूरोक्रेट और राजनीतिज्ञों के बीच के सम्बंध भारत को खतरे में डाल रहे हैं, एक वर्ष से भी अधिक समय हो गया, जब मीडिया और विपक्षी दलों के सरकार पर दबाव डालने के बाद ही एफआईआर दर्ज हुई, हालांकि उसमें किसी का नाम नहीं है।

भारत मनीलांड्रिंग पर एफएटीएफ का सदस्य है। यह एक अन्तर–सरकार संस्था है जिसका गठन मनीलांड्रिंग से मुकाबला करने के उद्देश्य से अन्तर्राष्ट्रीय प्रत्युत्तर के लिए किया गया। एफएटीएफ राजनैतिक रूप से अभिव्यक्त व्यक्तियों (पीईपी) द्वारा किए जाने वाले सौदों पर नजर रखती है। इस पर भी यूपीए शासन में वैधानिक संस्थाओं के मुंह बंद कर दिए गए जिससे वे घोटाले के लाभार्थियों द्वारा बड़े स्तर पर की जाने वाले मनीलांड्रिंग के प्रति आवाज उठाकर सावधान भी नहीं कर सकते। ये लोग वैसे ही सौदे करते रहे। आज भी ऐसे दोषी स्वतंत्र घूम रहे हैं और उन्हें सजा भी नहीं मिलती है।

वैध रूप से अर्जित जिस पर टैक्स नहीं दिया जाता और दिया धन दोनों ही विदेशों में कालाधन माना जाता है। 2009 में यूपीए द्वारा सत्ता में आने के बाद वायदा किया था कि वह छिपे धन को देश में वापस लाने के लिए 100 दिनों में कार्रवाई शुरू कर देगी। वित्तमंत्री अच्छी तरह जानते हैं कि 2009 में जी–20 बैठक में कालाधन चर्चा का विषय रहा था। फिर भी भारत ने अभी तक भी भ्रष्टाचार पर यूएन चार्टर की पुष्टि नहीं की है। इसकी पुष्टि करने पर भारत को विदेशों से कालेधन पर सूचना प्राप्त करने का अधिकार मिल जाता है। स्पष्ट है कि यूपीए सरकार इस दिशा में आगे बढ़ने से कतरा रही है। समझा जाता है कि लिश्नेंस्टीन में भारतीयों द्वारा रखे कालेधन की एक सूची दो वर्ष पहले ही भारत सरकार के पास पहुंच गई है। जब तक सुप्रीम कोर्ट ने इस विषय पर सरकार पर कार्रवाई न करने की भर्त्सना नहीं की तब तक यूपीए सरकार ने कोई प्रयास ही नहीं किया। इसके बाद भी, उसने केवल एक बहु–अनुशासकीय ग्रुप का गठन किया है ताकि वह विदेशों में कितना कालाधन है, उसका पता लगाए और आगे के लिए सुझाव दे। सुप्रीम कोर्ट ने अपनी टिप्पणी में कहा– "यह तो हमारे राष्ट्रीय धन की विशुद्ध चोरी है– मन को दहला देने वाला अपराध है, यह राष्ट्र की सम्पत्ति की लूट है और यह एकदम विशुद्ध सत्य है।" ग्लोबल फिनांश्यल इंट्रिग्रिटी का कहना है कि स्विस बैंकों में ही 20.85 लाख करोड़ रूपए का अनुमान है। मोटे तौर पर, विदेशों में भारतीय काला धन का अनुमान भारत के विदेशी ऋण से 10 गुने से भी कहीं ज्यादा है।

विदेशों में जमा कालाधन और भारतीय सम्पत्ति हमारे महान भारत के लिए गहन चिंता का विषय है। भारत सरकार इस सम्पत्ति को देश में लाने के लिए अधमरे मन से प्रयास कर रही है। हसन अली का नाम देश के कर चूककर्ताओं में सबसे ऊपर है, क्योंकि उससे 76,000 करोड़ से अधिक का कर वसूला जाना है। वह स्वतंत्र घूम रहा है और अभी कुछ दिन पहले ही सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि अभियोजन एजेंसी को सुनिश्चित करना चाहिए कि वह देश छोड़कर बाहर न जा पाए।

अनियंत्रित भ्रष्टाचार की शृंखला

2जी स्पेक्ट्रम, कॉमनवेल्थ खेल (सीडब्ल्यूजी), आदर्श हाउसिंग सोसाइटी और अब मन दहलाने वाले इसरो–देवास घोटालों से उत्पन्न अनियंत्रित भ्रष्टाचार की शृंखला ने आम आदमी का विश्वास तोड़ दिया है। इनमें से प्रत्येक घोटाले ने लाखों–करोड़ों रूपए से देश के खजाने को नुकसान पहुंचाया है। दुर्लभ राष्ट्रीय सम्पदा को नष्ट कर दिया है या इसे नाममात्र मूल्य पर कुपात्र भाग जाने वाले ऋणदाताओं के हाथों बेच दिया। यूपीए सरकार भ्रष्टाचार को फैलाने में कानूनी और नैतिक रूप से जिम्मेदार है।

2–जी स्पेक्ट्रम से अपार धनराशि की हानि हुई है और भवन–निर्माता दलालों–राजनीतिज्ञों के सम्बंध से इन लोगों को कितनी दलाली मिली, उसका अभी हिसाब लगाना बाकी है। इससे पता चलता है कि बड़े व्यवस्थित ढंग से अथारिटीज को नकारा गया, नियमों को ताक पर रखा गया और धोखाधड़ी की गई, परामर्शदाताओं को पूरी तरह किनारे लगा कर व्यवस्था पर पूर्णतः हावी हुआ गया। हर मौके पर सम्बंधित मंत्री कहते रहे कि उन्होंने आवश्यक और विधिवत स्वीकृतियां ले ली हैं। सामूहिक जिम्मेदारी के नाम पर और प्रधानमंत्री को इन मामलों पर अपनी विभिन्न भूलों पर देश को जवाब देना होगा। देश को हुआ नुकसान अभूतपूर्व है और प्रधानमंत्री की गहरी चुप्पी बेहद चिंताजनक है।

कामनवेल्थ खेल विभिन्न स्तरों पर भाई–भतीजावाद और दलाली खाने का प्रतीक बन गई है। साथ ही, इससे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और

छवि गिरी है।

आदर्श सोसाइटी घोटाले में ही रक्षा मंत्रालय की जांच ने भवन–निर्माताओं, ब्यूरोक्रेटों, राजनीतिज्ञों तथा कुछेक वरिष्ठ आर्मी अफसरों के बीच के सम्बंध खोल दिए हैं। देश की सुरक्षा का विचार किए बिना जिस तरह से युद्ध में मारे गए सैनिकों की विधवाओं के लिए रक्षा भूमि को निजी प्रयोजनों के लिए हड़पा गया और जिसमें किसी अधिकारी को दण्ड भी नहीं मिला, यह स्थिति अत्यंत गम्भीर है।

इसरो–देवास के अनेक आयाम हैं– इसरो के अंदर ही फ्रॉड का षड्यंत्र, दुर्लभ राष्ट्रीय संसाधनों को मुफ्त दे दिया गया, निजी वाणिज्यिक प्रयोग के लिए कस्टम–निर्मित सेटेलाइटों को तैयार करने के लिए सरकारी धन का विविधीकरण आदि। परन्तु, अत्यंत भयावह तथ्य यह है कि कोस्टगार्डों इंटेलिजेंस द्वारा इस्तेमाल स्पेक्ट्रम–2.6 जीएचजेड का 'गोल्डन बैंड' पहली बार निजी वाणिज्यिक प्रयोग के लिए दिया गया। और यह सब कुछ बिना पारदर्शिता और जवाबदेही प्रक्रिया के किया गया।

इसरो अंतरिक्ष विभाग के अन्तर्गत कार्य करता जिसका मंत्रालय स्वयं प्रधानमंत्री संभालते हैं। यब बात स्वीकार नहीं की जा सकती है कि प्रधानमंत्री मंत्रिमण्डल निर्णयों में सभी मंत्रियों में सबसे शिखर पर अंतिम जिम्मेदारी के सिद्धांत से बेखबर हों। परन्तु, एस–बैण्ड घोटाले में तो यह मंत्रालय ही उनके अधीन है। इस विषय पर उनकी चुप्पी से भी उनकी मिलीभगत और आपराधिकता पर गम्भीर सवाल खड़ा होता है। अभी जब यूपीए सरकार ओतावियो क्वात्रोच्चि के खिलाफ मुकदमा वापस लेने वाली भी तभी आयकर अपीलीय अधिकरण ने बोफोर्स सौदे से अर्जित धनराशि का दावा पेश कर दिया। दूसरे शब्दों में, दलाली दी गई और ली गई। मीडिया ने श्री क्वात्रोच्चि के बारे में प्रमाण दिए हैं कि उनका कांग्रेस पार्टी के परिवार के साथ मेलजोल बहुत साफ था। भारत के लोग अब भी बोफोर्स पर उत्तर जानने के लिए उत्सुक है। हर मामले में, हमने हर तरह से देखा है कि व्यवस्था में जो भी 'जांच और संतुलन' की प्रक्रिया रखी गई है, उन सभी का उल्लंघन हुआ है या उनसे बचने की कोशिश की गई है। कुछ मामलों में तो उन्हें बड़ी चुनौती दी गई है। परन्तु, यूपीए सरकार सही रास्ते पर चलने को तैयार ही नहीं है। आज उसके पास अपनी विफलताओं को कोई तर्कसंगत जवाब नहीं है।

यह सरकार या तो मना करती रहती है या मौन बनी रहती है। उनके मंत्री तर्कहीन बोलते हैं, भ्रमित करते हैं और गुमराह करते हैं– और इनके पीछे इनका उद्देश्य है घोटालों को छुपाना। स्पष्ट है कि केवल जेपीसी ही जान सकती है कि कहां–कहां चूक हुई, क्या यह व्यवस्थागत विफलता थी, नीतिगत विफलता थी, विनियमों और सरकारी नीतियों को तैयार करने में लाबिस्टों की क्या भूमिका थी, जो निश्चित रूप से प्रधानमंत्री द्वारा अपनी केबिनेट को चुनने को विशेषाधिकार से संबंधित है।

बुनियादी ढांचा पूर्णत: भग्न

एनडीए के शासन के दौरान बुनियादी ढांचे को उच्चतम प्राथमिकता दी गई। 'गोल्डन क्वाड्रिलेटरल' का निर्माण किया गया और रिकार्ड समय में पूरा किया गया। साथ ही, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना को भी उच्च प्राथमिकता पर रखकर काम हुआ। यूपीए सरकार ने इन सब पर रोक लगा दी। सच तो यह है कि कांग्रेस घोषणापत्र 2009 में ग्रामीण बुनियादी ढांचे में एक भी बात नहीं की गई है।

यूपीए–I शासन के अंत में, राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना (एनएचडीपी) के अन्तर्गत लगभग 33000 किमी का निर्माण रूक गया क्योंकि निजी निवेशक इससे बाहर रहे। मंत्री महोदय ने पांच वर्षों में 35000 किमी राजमार्गों के निर्माण का वायदा किया था। ये लक्ष्य तभी प्राप्त हो सकता है जब प्रतिदिन कम से कम 20 किमी का निर्माण होता। अब तो प्रतिदिन 8 किमी का कार्य भी पूरा नहीं हो रहा है। भूतल मंत्रालय और योजना आयोग के बीच चल रहे झगड़े के कारण मंत्रालय का लक्ष्य प्राप्त करने की क्षमता हमारे सामने रिकार्ड में हैं।

छोटी बन्दरगाहों का निर्माण भी हर जगह विफल रहा है; गुजरात ही एकमात्र ऐसा राज्य है जहां वहां के नेतृत्व की क्षमता के कारण कई छोटी बंदरगाहों को पूरा करने में सफलता प्राप्त की है।

यह सभी को मालूम है कि एयर इण्डिया को नुकसान हो रहा है और ऐसा लगता यह तो नुकसान उठाने के लिए ही इसका जन्म हुआ है। इस राष्ट्रीय संस्था को पुनर्जीवित करने के लिए व्यापक पैकेज तैयार ही नहीं हुआ, यहां तक कि प्राइवेट एयरलाइनों में भी हड़तालें हुईं और एयरसेफ्टी का विषय गहन चिंता का विषय है। समझा जाता है कि विश्व की सबसे बड़ी रोजगार देने वाली भारतीय रेल भी गहरे वित्तीय संकट में है। मालभाडा महंगा होता जा रहा है, उधर यात्रियों की सुरक्षा लगातार चिंताजनक होती जा रही है। नई लाइनें बिछाने के काम की मंजूरी नहीं मिल रही है, उनकी संख्या बढ़ती जा रही है, जिनकी मंजूरी मिल भी जाती है तो उनके बिछाने की गति बेहद धीमी है।

भारतीय कारोबार आंशिक रूप से देश से बाहर

उद्योग, पर्यावरण, गृह और वित्त जैसे सम्बंधित मंत्रालयों के बीच निर्णय लेने में ढुलमुल और विसंयोजन से गलत संकेत मिल रहे हैं। अनुमति

प्राप्त करने की बाधाएं पार करना मुश्किल हो रहा है। संसद में नीतिगत प्रतिबद्धताएं बदलती रहती है या नए ढंग से बनाया जाता है। राज्य सरकारों के निर्णयों पर मनमर्जी से सवाल खड़े किए जाते हैं और यहां तक कि उन्हें रद्द कर दिया जाता है।

स्पष्ट है कि इस सरकार में समायोजन की कमी है। महत्वपूर्ण विषयों के निर्णयों में विलम्ब और विखंडित किए जाने से निवेशक भ्रमित रहते हैं। दूसरी पीढ़ी के सुधारों को और आगे बढ़ाने का समय बीतता चला जा रहा है। उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार और भाई–भतीजावाद के कारण निवेशक पीछे हटते जा रहे हैं। बुनियादी ढांचे के विकास में वातावरण की कमी तथा निष्क्रियता के कारण उद्योगपतियों में गहरा संदेह पैदा हो रहा है।

जो उद्योग अपनी निर्माण ईकाइयां लगाने की कोशिश कर रहे हैं, उन्हें गैर–विवादास्पद भूमि प्राप्त करना मुश्किल हो रहा है। निवेश–अनुकूल राज्यों के साथ सौतेला व्यवहार किया जाता है। भारत के अंदर बाइब्रेंट इकानामी से लाभ उठाने वाले पीएसयू अलिखित प्रतिबंध के शिकार बन रहे हैं।

एक विख्यात बैंकर का कहना है– ''(बिग ब्वाय्ज) बड़े कारोबारी दूसरे देशों की ओर निहार रहे हैं क्योंकि उनके लिए वहां कारोबार करना आसान है; वहां कारोबार चलाना बड़ा सहज है''

भारतीय कारोबारियों का भारत से बाहर कारोबार बढ़ाने का स्वागत है, परन्तु उन्हें भारत में भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद या लालफीताशाही के डर से यहां काम करने के लिए निराश नहीं होना चाहिए।

वर्तमान रूख को देखते हुए, कृषि और निर्माण दोनों क्षेत्रों के विकास में गिरावट आई है। यह फिर वहीं चिंता का विषय है और निवेशकों के लिए शुभ लक्षण नहीं है।

एथिकल और गवर्नेंस घाटा

एक साक्षात्कार में यह शब्द गृहमंत्री पी. चिदम्बरम के हैं। जैसाकि उन्होंने सही कहा कि ये चिंताए बहुत समय से चली आ रही हैं, और वर्तमान सरकार द्वारा किए गए प्रयास इनके समाधान के लिए पूरी तरह से अपर्याप्त हैं। गवर्नेंस पूरी तरह गायब है।

सरकार के निर्णयों पर भरोसा नहीं है। नीतियां इतनी ढुलमुल रहती है और इनकी मंजूरियों की प्राप्ति पर इसके बाद संदेह होने लगता है। मुख्य सतर्कता आयुक्त (सीवीसी) की नियुक्ति विवादास्पद है और इस पर कानूनी छानबीन हो रही है। किन्तु, उनका इस पर बना रहना और सरकार का सुप्रीम कोर्ट में गुमराही अर्ध–सत्य पेश करना चिंताजनक है।

विपक्षी नेताओं के साथ गैर-कानूनी व्यवहार

संसद के दोनों सदनों के विपक्षी नेताओं, श्रीमती सुषमा स्वराज और अरूण जेटली एक रैली में भाग लेने जम्मू गए, उन्हें हवाई जहाज से नीचे भी नहीं उतरने दिया गया। उन्हें हवाई अड्डे के टार्मेक पर बिना किसी अधिकार के रोके रखा गया और बाद में रात्रि को जम्मू और काश्मीर से बाहर भेजा गया। स्पष्ट है कि जम्मू और काश्मीर में नेशनल कांफ्रेंस और कांग्रेस–नीत गठबंधन सरकार ने संवैधानिक स्थिति के नेताओं के साथ गलत आचरण करके उनके अधिकारों से वंचित किया।

भारतीय जनता युवा मोर्चा का तिरंगा यात्रा और लालचौक पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने पर प्रतिबंध शर्मनाक है। स्पष्ट है कि यह अलगाववादियों के सामने घुटने टेकने का प्रयास था। इसी से इस यात्रा का आह्वान न्यायोचित बन जाता है जिसमें उन लोगों की मनोवृत्ति पर सवाल खड़ा किया गया था कि वह कौन से लोग हैं जो अलगाववादियों को शह देते हैं और राष्ट्रवादियों का दमन करते हैं। उन्होंने काश्मीर घाटी में राष्ट्रीय प्रतीक पर ही आपत्ति कर दी।

अपूर्व स्तर पर फोन टैपिंग

देश में एक निजी टेलीकॉम आप्रेटर द्वारा टेलीफोन टैपिंग मामला सामने आने से यह बहुत गम्भीर मामला बन जाता है। यथावत अनुमति से किसी व्यक्ति के टेलीफोनों की टैपिंग होती है, वह भी तभी जब सुरक्षा या अन्य राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों की बात हो। परन्तु इतने बड़े स्तर पर टैपिंग करना भयावह है और यह गम्भीर प्रश्न खड़ा करता है कि किस कारण ऐसा हुआ। भाजपा इस मामले में सरकार से विस्तृत प्रक्रिया देने की मांग करती है।

सरकार नेतृत्वविहीन है। भाजपा का कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार पर आरोप है कि वह ही पूरे तौर पर इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है। यह सरकार अयोग्य है और नेतृत्व संभालने और शासन करने की इच्छुक ही नहीं है, अफसोस है कि यह बस सत्ता में बने रहना चाहती है। यह कोई जिम्मेदारी नहीं लेना चाहती; यह स्वयं को छोड़कर किसी के प्रति भी जवाबदेह भी नहीं होना चाहती है और बदतर स्थिति तो यह है कि यह जवाब तक देने को तैयार नहीं है।

भाजपा की मांग है:

संयुक्त संसदीय समिति इस सरकार के भ्रष्टाचार घोटालों की जांच करे।

प्रधानमंत्री, विशेष रूप से इसरो–देवास सौदे पर बयान दें। तुरंत ही खाद्यान्नों की कीमतें घटाने के लिए उपाए किए जाएं।

एक निजी टेलीकॉम आप्रेटर द्वारा टेलीफोन टैपिंग का जो मामला सामने आया है, उस पर भारत सरकार औपचारिक वक्तव्य दे। ■

‘पत्रकारिता और दीनदयाल उपाध्याय’ पुस्तक का लोकार्पण

दीनदयाल जी का चिंतन साम्यवाद और पूंजीवाद से अलग –नितिन गडकरी

jkजधानी दिल्ली के रफी मार्ग स्थित कॉन्स्टीट्यूशन क्लब के स्पीकर हॉल में गत 11 फरवरी को पंडित दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि के अवसर पर ‘पत्रकारिता और दीनदयाल उपाध्याय’ नामक पुस्तक का लोकार्पण भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने किया।

लोकार्पण कार्यक्रम भारतीय जनता पार्टी के उपक्रम ‘दीनदयाल समग्र’ द्वारा आयोजित था। पुस्तक का संपादन डा. महेश चंद्र शर्मा ने किया है।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में पुस्तक के संपादक डा. महेश चंद्र शर्मा ने कहा कि पुस्तक में दीनदयाल जी के व्यक्तित्व को दर्शाते हुए लेख हैं। उन्होंने कहा कि दीनदयाल जी की पत्रकारिता मिशनरी पत्रकारिता थी।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री नितिन गडकरी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय को विनम्र सुमनांजलि अर्पित करते हुए कहा कि दीनदयाल जी के विचारों के बारे में देशभर में बहुत चर्चा हुई है। अनेक बार दीनदयाल उपाध्याय, महात्मा गांधी, राममनोहर लोहिया आदि के विचारों पर लेख छपते रहे हैं।

वामपंथी विचारधारा पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि चीन और रूस जो आज आर्थिक शक्ति बनने की ओर अग्रसर हैं, वहां लाल रंग है, वामपंथी निशान है, लेकिन उन विचारों के बारे में आग्रह नहीं है, जो लेनिन आदि से मिले थे।

श्री गडकरी ने कहा कि बहुत अफसोस की बात है कि चीन और रूस की कम्युनिस्ट पार्टी तो भारतीय जनता पार्टी को बातचीत के लिए बुलाती हैं, लेकिन भारत की कम्युनिस्ट पार्टी भारतीय जनता पार्टी के साथ बातचीत को तैयार नहीं है। उन्होंने कहा कि आज साम्यवाद अपनी ही धरती पर बदल गया है।

श्री गडकरी ने कहा कि 1947 में पंडित नेहरू ने विकास का जो प्रारूप स्वीकार किया, उसके परिणाम आज हमारे सामने हैं। उसी प्रारूप के चलते आज तक ग्रामीण क्षेत्र का विकास नहीं हो पाया है। किसान आत्महत्या कर रहे हैं, जबकि कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। उन्होंने कहा कि पंडित दीनदयाल जी का जो चिंतन है, उस नीति पर अगर हम अपनी अर्थनीति को लेकर जाते हैं, तो यह समस्या नहीं होगी। क्योंकि उनका चिंतन साम्यवाद और पूंजीवाद से परे है।

इस अवसर पर दिल्ली विधानसभा में विपक्ष के नेता प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा, दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता सहित राजधानी दिल्ली के अनेक गणयमान्य नागरिक उपस्थित थे।■

लोक कल्याणकारी राज्य में गरीबों की चिंता सर्वाधिक महत्वपूर्ण : गडकरी

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' तथा भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने 11 फरवरी को देहरादून, गांधी पार्क में आयोजित एक भव्य समारोह में 'अटल खाद्यान्न योजना' का उद्‌घाटन किया। इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री मेजर जनरल (से.नि.) भुवन चन्द्र खण्डूरी, नारायण दत्त तिवारी, खाद्य मंत्री दिवाकर भट्ट, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बिशन सिंह चुफाल, मुख्य सचिव सुभाष कुमार सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं स्थानीय जनता उपस्थित थी। कार्यक्रम के सांकेतिक शुभारम्भ के रूप में मुख्यमंत्री डॉ. निशंक और भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी एवं अन्य महानुभावों द्वारा कुछ लाभार्थियों, विकास नगर की मजिदन, सहसपुर की लक्ष्मी देवी और रायपुर की मंजू देवी को खाद्यान्न के थैले वितरित किये गये। इस अवसर पर 'अटल आवास योजना' के अन्तर्गत देहरादून जनपद के कुछ लाभार्थियों को देय धनराशि की प्रथम किस्त भी भेंट की गई।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने कहा कि यह हर्ष का विषय है कि पं. दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर अटल बिहारी वाजपेयी जैसे महान नेता के नाम पर गरीबों के लिए ऐसी कल्याणकारी योजना को शुरू किया जा रहा है। उन्होंने उत्तराखण्ड सरकार की प्रशंसा की, कि उन्होंने गरीबों के लिए 'अटल खाद्यान्न योजना' प्रारम्भ की।

पं. दीनदयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर अटल बिहारी वाजपेयी जैसे महान नेता के नाम पर गरीबों के लिए ऐसी कल्याणकारी योजना को शुरू किया जा रहा है। उन्होंने उत्तराखण्ड सरकार की प्रशंसा की, कि उन्होंने गरीबों के लिए अटल खाद्यान्न योजना प्रारम्भ की। श्री गडकरी ने कहा कि लोक कल्याणकारी राज्य में गरीबों की चिंता सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है। उन्होंने यह भी कहा कि सस्ता अनाज बांटने के निर्णय सरकार के लिए आसान नहीं होते हैं परन्तु मजबूत राजनैतिक इच्छा शक्ति से यह कार्य आसान हो जाता है।

श्री गडकरी ने कहा कि लोक कल्याणकारी राज्य में गरीबों की चिंता सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है। उन्होंने यह भी कहा कि सस्ता अनाज बांटने के निर्णय सरकार के लिए आसान नहीं होते हैं परन्तु मजबूत राजनैतिक इच्छा शक्ति से यह कार्य आसान हो जाता है।

श्री गडकरी ने कहा कि 21वीं सदी की राजनीति विकास की राजनीति है और उत्तराखण्ड ने 9.41 प्रतिशत विकास दर के साथ विकास की इस दौड़ में अपने आप को तेजी से स्थापित किया है। गडकरी ने छत्तीसगढ़ के नागरिक आपूर्ति प्रणाली की प्रशंसा करते हुए राज्य के खाद्य एवं आपूर्ति विभाग को उनका अनुसरण करने सलाह दी। श्री गडकरी ने कहा कि गरीबों की इस कल्याणकारी योजना को हर हाल में सफल बनाना है और यदि आवश्यकता हो तो इसके लिए राशन दुकानों का कमीशन भी बढ़ाया जा सकता है।

श्री गडकरी ने उत्तराखण्ड की आर्थिक विकास दर, प्रति व्यक्ति आय की प्रशंसा करते हुए कहा कि उत्तराखण्ड

वर्तमान सरकार के नेतृत्व में तेजी से विकास कर रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. निशंक ने कहा कि अटल खाद्यान्न योजना के रूप में राज्य सरकार ने संकल्प लिया है कि प्रदेश में कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं रहेगा। उन्होंने कहा कि बीपीएल श्रेणी के लोगों को दो रुपये किलो गेहूं और तीन रुपये किलो चावल प्रदान कर उत्तराखण्ड सरकार ने सही मायने में अंत्योदय के सपने को साकार किया है। उन्होंने कहा कि दैवीय आपदा की मार से प्रभावित उत्तराखण्ड की जनता को केन्द्र की अदूरदर्शी नीतियों के कारण महंगाई के प्रकोप को भी झेलना पड़ रहा है। ऐसे में इस योजना को लागू कर राज्य सरकार ने यह तय किया है कि किसी को दो वक्त की रोटी का संकट नहीं रहेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखण्ड ने शिक्षा, स्वास्थ्य, समाज कल्याण, रोजगार जैसे कई क्षेत्रों में तेजी से तरक्की की है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार राज्य को शिक्षा के हब के रूप में विकसित कर रही है। चिकित्सा के क्षेत्र में सरकार ने तात्कालिक और दीर्घकालिक रणनीति बना कर 108 सेवा एवं सचल चिकित्सालयों को प्रारम्भ किया है, वहीं दूसरी ओर श्रीनगर और हल्द्वानी में सरकारी मेडिकल कालेजों में 15 हजार रुपये सालाना की नाममात्र फीस पर बच्चों को डाक्टर बनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि मेडिकल कालेजों की तर्ज पर सरकारी इंजीनियरिंग कालेजों में भी प्रतिभाशाली निर्धन विद्यार्थियों को निःशुल्क इंजीनियरिंग की शिक्षा दी जायेगी।

कार्यक्रम को पूर्व मुख्यमंत्री मेजर जनरल (से.नि.) भुवन चन्द्र खण्डूरी, खाद्य मंत्री दिवाकर भट्ट, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बिशन सिंह चुफाल ने भी समारोह को सम्बोधित किया। ■

भाजपा को सर्वस्पर्शी व सर्वव्यापी बनाने का अभियान शुरू

उत्तर प्रदेश में भाजपा के चुनाव अभियान के प्रमुख श्री कलराज मिश्र ने प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी मुहिम छेड़ दी है। 12 फरवरी को लखनऊ में इसकी शुरूआत उन्होंने दीन दयाल उपाध्याय की पुण्यतिथि पर हुए एक कार्यक्रम में 'समरसता भोज' से की। इस मौके पर उन्होंने मायावती सरकार पर भी निशाना साधा। 'समरसता भोज' के अवसर पर उपस्थित जन समुदाय को संबोधित कर रहे थे।

श्री मिश्र ने कहा कि विकास योजनाओं के लिए आवंटित धन का बड़ा हिस्सा सत्तारूढ़ दल के नेताओं के जेब में जा रहा है। जन कल्याण की योजनाओं में लगने वाली जनता की गाढ़ी कमाई को भ्रष्टाचार के तहत केन्द्र व प्रदेश की सत्ता में बैठे लोग साजिश कर समेटने में जुटे हैं। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में भ्रष्टाचार ने अपनी जड़ें जमा ली हैं। गरीबों, किसानों व मजदूरों के कल्याण के लिए चलने वाली सरकारी योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों को नहीं मिल पा रहा है। किसानों और मजदूरों की उपेक्षा हो रही है। पेंशन व अनुदान के लिए आवंटित धन की बंदरबाट की जा रही है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में भ्रष्टाचार किस कदर हावी है इसका सच मुख्यमंत्री के दौरों में उभरकर सामने आ रहा है। मुख्यमंत्री के सामने ही कई जगहों पर घटिया निर्माण के मामले सामने आए हैं। दलित महिला मुख्यमंत्री के राज में सबसे ज्यादा महिलाएं ही उत्पीड़न व बलात्कार की शिकार बन रही हैं। श्री मिश्र ने उपस्थित जनता का आह्वान किया कि वे स्वस्थ समाज की स्थापना के लिए भाजपा को अपना समर्थन देकर भ्रष्टाचार व आतंकवाद का पर्याय बन गई सरकारों को उखाड़ फेंकने का काम करें। ■

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने हमें अंत्योदय का सूत्र दिया था, जिसमें शोषितों, पिछड़ों और दलितों का उत्थान एकात्म मानववाद के माध्यम से करने की कल्पना भारतीय राजनीति को सबसे पहले दी थी। यही भाजपा की कार्ययोजना का ध्येय वाक्य है।

श्री कलराज मिश्र ने प्रदेश में समाज के दलितों, पिछड़ों और महिलाओं के साथ बलात्कार, लूट, हत्या, अपहरण और उत्पीड़न की घटनाओं को बसपा सरकार की पहचान बताई। श्री मिश्र ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने हमें अंत्योदय का सूत्र दिया था, जिसमें शोषितों, पिछड़ों और दलितों का उत्थान एकात्म मानववाद के माध्यम से करने की कल्पना भारतीय राजनीति को सबसे पहले दी थी। यही भाजपा की कार्ययोजना का ध्येय वाक्य है। शोषित–पीड़ित की सेवा करना और राष्ट्र से भय, भूख, गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा और भ्रष्टाचार को दूर कर समृद्ध भारत का निर्माण करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कार्यकर्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि दीनदयाल उपाध्याय के स्वप्नों का भारत बनाने के लिए उन्हें एकात्म मानववाद व अंत्योदय को अपना सूत्र वाक्य बनाना होगा। मिश्र दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में एकता सदन जापलिंग रोड में आयोजित

मछुआरों की गिरफ्तारी के खिलाफ श्रीलंका दूतावास पर भाजपा का विशाल प्रदर्शन

& laoknnkrk }kjk

Jh लंका के सुरक्षा बलों द्वारा 15 फरवरी को 106 भारतीय मछुआरों की गिरफ्तारी और पिछले दिनों कई मछुआरों की हत्या के खिलाफ 16 फरवरी को भारतीय जनता पार्टी ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष श्रीमती सुषमा स्वराज के नेतृत्व में श्रीलंका दूतावास पर विशाल प्रदर्शन कर श्रीलंकाई राजदूत को चेतावनी दी कि यदि आज शाम तक गिरफ्तार 106 मछुआरों को रिहा नहीं किया जाता है तो भारतीय जनता पार्टी श्रीलंका सरकार के खिलाफ अपना आंदोलन तेज करेगी।

श्रीमती स्वराज ने प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुये कहा कि भारतीय मछुआरों की हत्या और गिरफ्तारी से पूरा भारत आहत है। दुख की बात है कि भारत सरकार इस मामले को गंभीरता से नहीं ले रही है। उसका रूख कमजोर है। यदि भारत सरकार सख्त होती तो श्रीलंका की इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह हवा के बहाव में श्रीलंकाई समुद्री सीमा में गलती से प्रवेश कर बैठे भारतीय मछुआरों पर गोलियां बरसाकर उन्हें हताहत करती और सौ से अधिक मछुआरों को गिरफ्तार करती।

एक तरफ भारतीय विदेश सचिव श्रीलंका सरकार से इस विषय में वार्ता कर रहे हैं वहीं श्रीलंका सरकार अपनी अमानवीयता से बाज नहीं आ रही है। उसने राजनैतिक स्तर पर समस्या को सुलझाने की बजाय मामले को गंभीर रूख दे दिया है। यह अच्छे पड़ोसी होने का द्योतक नहीं है। भारत–श्रीलंका के संबंध बहुत पुराने हैं। श्रीलंकाई सरकार ने संबंधों का भी ख्याल नहीं रखा है।

श्रीमती स्वराज ने भारत सरकार से मांग की कि वह मामले की गंभीरता को देखते हुये तुरंत सक्रिय हो क्योंकि श्रीलंका के इस आचरण से सारा देश चिंतित है। उन्होंने बताया कि गत दिनों श्रीलंकाई राजदूत को उन्होंने अपने घर बुलाकर इस विषय में गहरी चिंता व्यक्त की थी और कहा था कि भारत अपनी सुरक्षा तथा हितों से कोई भी समझौता नहीं करेगा।

भारत श्रीलंकाई संबंधों का हवाला देते हुये श्रीमती स्वराज ने यह भी कहा था कि एक अच्छे पड़ोसी होने के कारण छोटी–मोटी घटनाओं को तूल नहीं देना चाहिये। श्रीलंका के राजदूत ने भविष्य में मछुआरों के साथ अमानवीय व्यवहार न होने का आश्वासन दिया था फिर भी भारतीय मछुआरों के साथ बर्बर व्यवहार कायम है। श्रीमती स्वराज तमिलनाडु के हताहत मछुआरों के परिवारों में भी गई थीं। उन्होंने भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी द्वारा प्रत्येक मृतक मछुआरे के परिवार को 2 लाख रूपये की आर्थिक सहायता भी दी थी। श्रीमती स्वराज ने बताया कि मछुआरों के परिवारजनों की हालत अत्यंत दयनीय है।

भारतीय मछुआरों की हत्या और गिरफ्तारी से पूरा भारत आहत है। दुख की बात है कि भारत सरकार का रूख कमजोर है। यदि भारत सरकार सख्त होती तो श्रीलंका की इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह हवा के बहाव में श्रीलंकाई समुद्री सीमा में गलती से प्रवेश कर बैठे भारतीय मछुआरों पर गोलियां बरसाकर उन्हें हताहत करती और सौ से अधिक मछुआरों को गिरफ्तार करती।

इस प्रदर्शन में सर्वश्री पवन शर्मा, आर.पी. सिंह, सतीश उपाध्याय, राधेश्याम शर्मा, आशीष सूद, प्रवेश वर्मा, अनिल गोयल, नरेन्द्र टंडन, महेन्द्र गुप्ता, कुलजीत चहल, रविन्द्र गुप्ता, सिम्मी जैन, शिखा रॉय, नकुल भारद्वाज, गजेन्द्र यादव सहित बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे।■